Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 26

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

3 ज़विलक़अदह 1441 हिजरी कमरी 25 इहसान 1399 हिजरी शमसी 25 जून 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

गुनाह अल्लाह के अतिरिक्त की मुहब्बत दिल में पैदा होने से पैदा हो तब है और धीरे-धीरे दिल पर ग़लबा कर लेता है। अत: गुनाह से बचने और सुरक्षित रहने के लिए यह भी एक माध्यम है कि इन्सान मौत को याद रखे और ख़ुदा तआला के कुदरत के आशचर्यों में ग़ौर करता रहे क्योंकि इस से अल्लाह की मुहब्बत और ईमान बढ़ता है और जब ख़ुदा तआला की मुहब्बत दिल में पैदा हो जाए तो वह गुनाह को ख़ुद जला कर भस्म कर जाती है ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

गुनाह की हक़ीक़त और इस से बचने के माध्यम

मैं इस स्थान पर यह बात भी बताना चाहता हूँ कि गुनाह कैसे पैदा होता है? इस सवाल का जवाब साधारण शब्दों में यही है कि जब अल्लाह के अतिरिक्त की मुहब्बत इन्सानी दिल पर छा जाती है तो वह इस साफ आइना पर एक किस्म का ज़ंग सा पैदा करती है जिसका नतीजा यह होता है कि वह धीरे-धीरे बिल्कुल अन्धेरा हो जाता है और ग़ैर अपना घर करके उसे ख़ुदा से दूर डाल देती है और यही शिर्क की जड़ है लेकिन हृदय पर अल्लाह तआला और सिर्फ अल्लाह तआला की मुहब्बत अपना क़ब्ज़ा करती है वह ग़ैरत को जला कर उसे सिर्फ अपने लिए चुन लेती है फिर इस में दृढ़ता पैदा हो जाती है और वह असल जगह पर आ जाती है। अंग के टूटने और फिर चढ़ने में जिस तरह से तकलीफ़ होती है लेकिन टूटा हुआ अंग कहीं ज़्यादा तकलीफ़ देता है जो उसे सिर्फ दोबारा चढ़ने से अस्थायी तौर पर होती है और फिर एक राहत का सामान हो जाता है लेकिन अगर वह अंग इसी तरह टूटा रहे तो एक वक़्त आ जाता है कि इस को बिलकुल काटना पड़ता है इसी तरह से दृढ़ता की प्राप्ति के लिए सब से पहले आरम्भिक स्तर और मुर्तबों पर इतनी तकलीफ़ और मुश्किलें भी आती हैं लेकिन इस के प्राप्त होने पर एक स्थायी राहत और ख़ुशी पैदा हो जाती है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह इरशाद हुआ فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ(हूद:113) तो लिखा है कि आपके कोई सफ़ेद बाल ना था फिर सफ़ेद बाल आने लगे तो आपने फ़रमाया मुझे सूरा हौद ने बूढ़ा कर दिया।

अत: यह है कि जब तक इन्सान मौत का एहसास न करे वे नेकियों की तरफ़ झुक नहीं सकता। मैंने बतलाया है कि गुनाह अल्लाह के अतिरिक्त की मुहब्बत दिल में पैदा होने से पैदा हो तब है और धीरे-धीरे दिल पर ग़लबा कर लेता है। अत: गुनाह से बचने और सुरक्षित रहने के लिए यह भी एक माध्यम है कि इन्सान मौत को याद रखे और ख़ुदा तआला के कुदरत के आशचर्यों में ग़ौर करता रहे क्योंकि इस से अल्लाह की मुहब्बत और ईमान बढ़ता है और जब ख़ुदा तआला की मुहब्बत दिल में पैदा हो जाए तो वह गुनाह को ख़ुद जला कर भस्म कर जाती है ।

दूसरा माध्यम गुनाह से बचने का मौत का एहसास है। अगर इन्सान मौत को अपने सामने रखे तो वे इन बुराइयों और कोताहियों से रुक जाए और ख़ुदा तआला पर उसे एक नया ईमान प्राप्त हो और अपने पिछले गुनाहों पर तौबा और लज्जित होने का अवसर मिले। इन्सान विनीत की हस्ती किया है ?सिर्फ एक दम पर भरोसा है। फिर क्यों वह आख़िरत की चिन्ता नहीं करता और मौत से नहीं डरता और नफ़सानी और हैवानी भावनाओं का अधीन और ग़ुलाम हो कर उम्र नष्ट कर देता है। मैंने देखा है कि हिंदुओं को भी मौत का एहसास हुआ है। बटाला में किशन चंद नामक एक भंडारी सत्तर या बहत्तर बरस की उम्र का था। उस वक़्त उसने घरबार सब कुछ छोड़ दिया और काशी में जा कर रहने लगा और वहां ही मर गया। यह सिर्फ इसलिए कि वहां मरने से इस की मोक्ष होगी मगर यह विचार उस का झूठा था। लेकिन इस से इतना तो मुफ़ीद नतीजा हम निकाल सकते हैं कि उसने मौत का एहसास मौत किया और मौत का एहसास इन्सान को दुनिया के आनन्दों में बिल्कुल डूबने से और ख़ुदा से दूर जा पड़ने से बचा लेता है। यह बात कि काशी में मरना मुक्ति का कारण होगा यह उसी मख़लूक़ परस्ती का पर्दा था जो उस के दिल पर पड़ा हुआ था मगर मुझे तो बहुत अफ़सोस होता है जबकि मैं देखता हूँ कि मुसलमान हिंदुओं की तरह भी मौत का एहसास नहीं करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो सिर्फ इस एक हुक्म ने कि فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ(हौद:113) ने ही बूढ़ा कर दिया। किस क़दर मौत का एहसास है। आपकी यह अवस्था क्यों हुआ सिर्फ इस लिए कि ताकि हम इस से शिक्षा लें। वर्ना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र और मुक़द्दस ज़िन्दगी की इस से बढ़कर और क्या दलील हो सकती है कि अल्लाह तआला ने आपको कामिल हादी और फिर क़यामत तक के लिए और इस पर सारी दुनिया के लिए निर्धारित फ़रमाया मगर आपकी ज़िन्दगी की समस्त घटनाएं एक व्यावहारिक शिक्षाओं का सार हैं जिस तरह पर क़ुरआन करीम अल्लाह तआला की किताब है और कानूने क़ुदरत उस की फ़ेअली (व्यवहारात्मक) किताब है इसी तरह पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी भी एक व्यवहारात्मक किताब है जो मानो क़ुरआन करीम का विस्तार और तफ़सीर है। मेरे तीस साल की उम्र में ही सफ़ेद बाल निकल आए थे और मिर्ज़ा साहिब मरहूम मेरे वालिद अभी ज़िन्दा ही थे। सफ़ैद बाल भी मानो एक किस्म का मौत का निशान होता है। जब बुढ़ापा आता है जिसकी निशानी यही सफ़ेद बाल हैं तो इन्सान समझ लेता है कि मरने के दिन अब क़रीब हैं। मगर अफ़सोस तो यह है कि इस वक़्त भी इन्सान को फ़िक्र नहीं लगता। मोमिन तो एक चिड़िया और जानवरों से भी आदर्श अख़लाक़ सीख सकता है क्योंकि ख़ुदा तआला की खुली हुई किताब उस के सामने होती है। दुनिया में जिस क़दर चीज़ें अल्लाह तआला ने पैदा की हैं वे इन्सान के लिए जिस्मानी और रुहानी दोनों किस्म के आनन्दों के सामान हैं। मैंने हज़रत जुनैद रहमहुल्लाह के वर्णन में पढ़ा है कि आप फ़रमाया करते थे। मैंने मुराक़बा बिल्ली से सीखा है। अगर इन्सान निहायत पर ग़ौर निगाह से देखे तो उसे मालूम होगा कि जानवर खुले तौर पर ख़ुलक़ रखते हैं। मेरे मज़हब में सब चैपाए तथा परिन्दे एक ख़लक़ हैं और इन्सान उस के मजमूआ (सार) का नाम है। यह नफ़स जामा है और इसी लिए आलम सग़ीर कहलाता है कि समस्त मख़लूक़ात के कमाल इन्सान में एक साथ तौर पर जमा हैं और समस्त इन्सानों के समस्त कमाल सार रूप में हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जमा हैं और इसी लिए आप सारी दुनिया के लिए भेजे गए और रहमतुन लिल्आमीन कहलाए। إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيمٍ (अल-क़लम: 5) में भी इसी इन्सानी कमालों के सारांक्ष की तरफ़ इशारा है। इसी सूरत में मुहम्मदी (स) आचरण की महानता के बारे में विचार कर सकता है और यही कारण था कि आप पर कामिल नबुव्वत के कमालात ख़त्म हुए। यह एक प्रामाणिक बात है कि किसी चीज़ का ख़ात्मा उस के जन्म के लक्ष्य के समापन पर होता। जैसे किताब की जब सारी बातें वर्णन हो जाती हैं तो इस का ख़ात्मा हो जाता है। इसी तरह पर रिसालत और नबुव्वत का लक्ष्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हुआ। और यही खत्म नबुव्वत के अर्थ हैं। क्योंकि यह एक सिलसिला है जो चला आया है और कामिल इन्सान पर आकर इस का ख़ात्मा हो गया ।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 149 से 152 प्रकाशन 2008 कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-9)

यूरोप आकर में धीरे-धीरे धर्म से दूर हो गई थी जलसा के माहौल ने मुझे फिर से धर्म की दौलत प्रदान कर दी और यही कारण है कि मैंने अहमदी होने का फ़ैसला किया और बैअत कर ली। (एक नई बैअत करने वाली औरत Therese Le Coq साहिबा)

जमाअत अहमदिया दलील से बात करती है और दलील के साथ मनवाती है, आपको सिर्फ इस वजह से बात नहीं करनी पड़ती कि बस मुल्ला ने कह दिया तो इसी तरह करना है , मैंने आज ख़लीफ़तुल मसीह के हाथ पर बैअत की है अहमदी होने के बाद मुझे बहुत शान्ति प्राप्त हुई है। (जज़ाइर कमोरोज़ Comoroseis) से अहमद साहिब

आज मेरी ख़ुशी की इंतिहा नहीं है , बैअत कर के बहुत अच्छा और सुकून महसूस कर रहा हूँ और इंशा अल्लाह आगे भी बहुत अच्छा रहूँगा। (फ्रांस के एक नई बैअत करने वाला लूइस साहिब)

मुझे हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर सीधा बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह मेरी ज़िन्दगी में मेरे लिए बहुत भावनात्मक घटना है (फ्रांस के एक नई बैअत करने वाले फ़लोरंटसाहिब)

नई बैअत करने वालों के ईमान वर्धक विचार।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

6 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक इतवार)बाक़ी रिपोर्ट

फ़ैमली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सवा छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के107 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस के अतिरिक्त 25 लोगों ने व्यक्तिगत रूप से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

प्रत्येक ने बारी बारी अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फरमाएं।

मुलाक़ात कारने वालों में तयूनस से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त ख़लील इस्बाई साहिब भी थे। उन्होंने आज हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य भी पाया था।

कहने लगे कि यद्यपि मैंने कुछ साल पहले बैअत की थी लेकिन आज ज़िन्दगी में पहली बार अपने आक़ा के मुबारक हाथ पर बैअत की है। मैं पैदा तो एक मुसलमान घराने में हुआ था लेकिन आज मुझे ऐसे लग रहा है कि मैं नए सिरे से पैदा हुआ हूँ। आज मुझे एक नई ज़िन्दगी प्रदान हुई है जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा तो मुझे ऐसा लग रहा था कि एक फ़रिश्ता को देख रहा हूँ।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का आयोजन हुआ।

7 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। आज प्रोग्राम के अनुसार बैयतुल अता (जलसा गाह) से मस्जिद मुबारक Saint Prix के लिए रवानगी थी।

प्रोग्राम के अनुसार 11 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा से बाहर तशरीफ़ लाए और दुआ करवाई और इस अवसर पर मौजूद मर्दों तथा औरतों को अस्सलामो अलैकुम कहा और यहां से क़ाफ़ला रवाना हुआ। यहां से जमाअत के मर्कज़ी मिशन हाऊस दारुस्सलाम और मस्जिद मुबारक Saint Prix की दूरी 60 किलोमीटर है

फ्रांस में जमाअत अहमदिया का यह पहला मर्कज़ी मिशन हाऊस और पहली मस्जिद है Saint Prix का क्षेत्र पैरिस के आसपास के इलाक़ों में से है। हुज़ूर अनवर का स्वागत करने के लिए पैरिस की विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें सुबह से ही जमा होने शुरू हो गए थे। 12 बज कर 20 मिनट पर जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की गाड़ी मिशन हाऊस के सेहन में दाख़िल हुई तो हुज़ूर अनवर का स्वागत करने के लिए हर तरफ़ हाथ फ़िज़ा में ऊंचा थे और बच्चियों के ग्रुपस स्वागत गीत प्रस्तुत कर रहे थे। अहलन व सहलन व मर्हबा या अमीरुल मोमिनीन की सदाएँ ऊंची हो रही थीं।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो एक तिफ़्ल प्रिय फ़रीद अहमद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में फूल प्रस्तुत किए और एक बच्ची प्रिया ईशा मन्सूर ने हज़रत बेगम साहिबा मद ज़िलहा आली की सेवा में फूल प्रस्तुत किए।

हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ ऊंचा कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने रिहायशी हिस्सा की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। मिशन हाऊस के साथ कई नए हिस्से बनाए गए थे। हुज़ूर अनवर ने उनके बारे में पूछा। अमीर साहिब फ्रांस ने बताया कि एक तरफ़ मज्लिस अंसार अल्लाह फ्रांस का दफ़्तर बनाया है और एक दूसरे हिस्सा में फिनांस का दफ़्तर बनाया है और एक मीटिंग रुम भी बनाया गया है

इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह में तशरीफ़ ले गए 2 बजकर 15 पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मुबारक तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार 5 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए

मिशन हाऊस के क़रीब क्षेत्र Sarcelles के डिप्टी गवर्नर Mr. Denis Dobo Scho Enenberg हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे।

महोदय ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि वह मिशन हाऊस क़रीबी अलाकह Sarcelles के डिप्टी गवर्नर हैं

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि आपके अधीन कितनी आबादी है और कितने शहर तथा क़स्बे हैं। इस पर गवर्नर ने निवेदन किया कि 62 विभिन्न शहर और क़स्बे इत्यादि उनके अधीन हैं और उनके रीजन में 4 लाख 72 हज़ार लोग हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने बताया कि फ्रांस में पिछले दिनों जो प्रोटेस्ट हुए थे वे अधिकतर पैरिस में हुए थे। उनके क्षेत्र में बहुत कम थे, कुछ हद तक थे

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह हंगामे हुए थे और लोग सड़कों पर आए थे इसकी वजह क्या थी। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि इकनॉमिक कारण भी हैं। बेरोज़गारी है, कुछ BROKEN HOME से भी आते हैं यह भी वजह है। लेकिन हम कोशिश करते हैं कि JOBS उपलब्ध करें। बच्चों के लिए स्कूलज़ उपलब्ध करें , ट्रांसपोर्ट को बेहतर करें। लेकिन यह काम आसान नहीं है

इन्हीं दिनों पुलिस स्टेशन पर हमला हुआ था और हमला करने वाले ने अपने ही साथियों को क़त्ल किया था, उस का ज़िक्र हुआ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। जिसने हमला किया था उसने तो कुछ समय पहले इस्लाम स्वीकार किया था। वह तो शादी

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

समय का ख़लीफा और जमाअत एक ही वजूद के दो नाम हैं।'

आजकल हम जिस हालत से गुज़र रहे हैं इस में ख़ासतौर पर ख़ुदा तआला के आगे झुकने की है।

ये आफ़तें और तूफ़ान और बलाऐं जो इस ज़माना में आ रही हैं उनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना से ख़ास सम्बन्ध है। अतः हमें अपने ईमान तथा विश्वास और अन्जाम अच्छा होने के लिए भी बहुत दुआएं करनी चाहिऐं और दुनिया के बचाने के लिए भी दुआएं करनी चाहिऐं।

उचित है कि इन परीक्षा के दिनों में अपने नफ़्स को मार कर तक़्वा धारण करें। मेरी उद्देश्य इन बातों से यही है कि तुम नसीहत और इबरत पकड़ो। दुनिया नश्वर होने का स्थान है, आख़िर मरना है ख़ुशी धर्म की बातों में है। असली मक़सद तो धर्म ही है।

वर्तमान हालात में अहमदियों के महफ़ूज़ रहने, जमाअत अहमदिया की तरक्कियों, माली क़ुर्बानी करने वालों, एम टी ए के काम करने वाले और इस्लामी जगत के अमन वाले इत्तिहाद के लिए की तहरीक

कुछ दुआओं की नसीहत

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 22 मई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सबसे पहले तो उन सब अहमदियों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्हों ने पिछले दिनों मेरे गिरने पर, चोट लगने पर अपने ग़ैरमामूली भवानाओं को प्रकट किया और बड़ी तड़प से दुआएं कीं। अल्लाह तआला आप सबको इस की बेहतरीन बदला दे, इख़लास तथा वफ़ा में बढ़ाए। इस ज़माना में ख़ुदा तआला के लिए और अल्लाह तआला के इरशाद के अनुसार आपस की मुहब्बत, खासतौर पर समय के ख़लीफा से यह इख़लास तथा वफ़ा के उदाहरण केवल जमाअत अहमदिया ही में मिल सकती है। यह दो तरफ़ की मुहब्बत भी अल्लाह तआला की पैदा की हुई है। यहां यह भी नहीं पता चलता कि कौन ज़्यादा दूसरे के लिए दर्द रखता है। कई बार तो यह लगता है कि जमाअत के लोगों की ख़िलाफ़त से मुहब्बत इंतिहा को पहुंची हुई है और समय का ख़लीफा की जमाअत के लोगों के साथ जो सम्बन्ध और मुहब्बत है कई लोगों के उदाहरण ऐसे हैं जिन्हें देखकर लगता है कि इस स्तर की नहीं है लेकिन बहरहाल यह दो तरफ़ की मुहब्बत है, दो तरफ़ से सम्बन्ध है और जैसा कि मैं ने कहा है एक ऐसा सम्बन्ध है जिसका कोई उदाहरण दुनियावी रिश्तों में नहीं मिलता। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला का यह वाक्य मुझे बहुत अच्छा लगता है कि

समय का ख़लीफा और जमाअत एक ही वजूद के दो नाम हैं।

(ख़ुतबाते नासिर भाग4 सफ़ा423 ख़ुतबा जुमा 29 सितम्बर1972 ई)

यह आप लोगों की दुआओं की ही क़बूलीयत है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ग़ैरमामूली तौर पर जो ज़ख़्म हैं जल्दी ठीक हुए। डाक्टर साहिब ने मुझे कहा कि चेहरे के ज़ख़म प्राय जल्दी ठीक हो जाते हैं लेकिन डाक्टर साहिब कहते हैं कि जिस रफ़्तार से यह ठीक हुए हैं मुझे भी उतना ख़्याल नहीं था। उनको मैं ने यही कहा था कि ईलाज तो अपनी जगह लेकिन असल चीज़ दुआएं हैं जो अहमदी कर रहे हैं। मुझे भी यह ख़्याल था कि कई ज़ख़्म हैं और इस के खुरंड उतरते हुए भी कम से कम दो हफ़्ते तो लगेंगे फिर शायद ज़ख़मों के कुछ निशान भी रह जाएं लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सात आठ दिन में ही सब साफ़ हो गया। इस चोट की वजह से मुझे मरहम ईसा लगाने का जो अनुभव हुआ वह भी बता देता हूँ कि कुछ समय हुआ मीर महमूद अहमद साहिब नासिर ने सुरयानी नुस्ख़े के अनुसार बना के मुझे भिजवाई थी। वह मैंने अब प्रयोग की। इसी तरह होमियोपैथिक केलंडोला (Calendula) है। बहरहाल असल फ़ज़ल तो अल्लाह तआला का है वही शाफ़ी है। दवाईयों का जो मैं ने ज़िक्र किया तो वह इसलिए कि शायद दूसरों को भी लाभ हो जाए कई बार ज़रूरत पड़ती है। बहरहाल अब यह दुआ करें कि चोट के जो बाक़ी निशान हैं अल्लाह तआला उन्हें भी जल्द बेहतर फ़रमाए। जो बुरे प्रभाव हैं दूर फ़रमाए।

अल्लाह तआला का फ़ज़ल ही असल ताक़त है जो दुआओं से मिलता है। मुझे याद है कि कुछ समय हुआ मेरे कंधे और बाज़ुओं में बहुत दर्द थी। हाथ उठाना मुश्किल था। दूसरे हाथ की मदद लेनी पड़ती थी। यहां स्पैशलिस्ट डाक्टर को दिखाया तो उसने यह कहा कि यह दर्द छः हफ़्ते से तीन चार महीने तक रह सकती है। बहरहाल कुछ दिन के बाद फिर उसने निरीक्षण किया, देखा तो उस वक़्त अल्लाह तआला के फ़ज़ल से नब्बे प्रतिशत दर्द ख़त्म हो चुकी थी। उसने बड़ी हैरत का इज़हार किया। उसे मैंने यही कहा था कि जब लाखों लोग दुआ कर रहे हूँ तो इसी तरह अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़र्मा देता है। अंग्रेज़ था कहने लगा मैं ईसाई भी हूँ और हमारा ख़ानदान मज़हबी भी है। दुआओं पर मुझे भी यक़ीन है और कहने लगा कि यक़ीनन यह दुआ से ही हुआ है।

अतः अल्लाह तआला का फ़ज़ल ही है जो हमें हरवक़त माँगना चाहिए और इस के आगे झुकना चाहिए। आजकल हम जिस हालत से गुज़र रहे हैं इस में खासतौर पर ख़ुदा तआला के आगे झुकने की ज़रूरत है। यूके से भी रिपोर्टें आ रही हैं और बाक़ी देशों से भी ये रिपोर्टें आ रही हैं कि इन हालात में जमाअत के लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ झुकने का बहुत ध्यान पैदा हुआ है। लॉक डाउन की वजह से घरों में खासतौर पर घर वाले मिलकर नमाज़ बाजमाअत का प्रबन्ध करते हैं। दर्स भी होता है। किसी न किसी किताब ,हदीस और क़ुरआन का दर्स भी होता है जिससे बड़ों का इलम भी बढ़ रहा है और बच्चों को भी धार्मिक इलम मिल रहा है। अल्लाह तआला पर ईमान में इज़ाफ़ा हो रहा है। अल्लाह तआला का फ़ज़ल हुआ कि इस समय में रमज़ान भी आ गया और लोगों की इबादत की तरफ़ जो ध्यान पैदा हो रहा था इस में पहले से बढ़कर इज़ाफ़ा हुआ। अब यह रमज़ान तो ख़त्म हो रहा है और इसी तरह कुछ हद तक लॉक डाउन पर भी मुख़्तलिफ़ हुकूमतें पाबन्दियां नर्म करने का इरादा कर रही हैं। कई हुकूमतें कर भी चुकी हैं। कई जगह यह नर्मी पैदा हो गई है। एक बात तो मैं यह कहना चाहूँगा कि पाबन्दियों पर नर्मी के साथ जो हुकूमत ने शर्तें लगाई हैं उन पर हर अहमदी को पाबन्द होने की कोशिश करनी चाहिए लेकिन सबसे बड़ी बात और अहम चीज़ जो हर अहमदी को अपने सामने रखनी चाहिए ये है कि कारोबारों की इजाज़त और बाहर निकलने की नरमी और फिर रमज़ान के महीने का गुज़र जाना किसी अहमदी को अल्लाह तआला की इबादत और जो नेकियां उन्होंने अपनाई थीं उन्हें ख़त्म करने वाला या उनमें कमी करने वाला न बनाए बल्कि उन नेकियों को और बाजमाअत नमाज़ों को जब तक मस्जिद में जाने पर पाबंदी है घरों में जारी रखना और जब मस्जिद जाने की इजाज़त मिल जाएगी तो मस्जिद को आबाद रखना अपने पर पहले से बढ़कर फ़र्ज़ करें। औरतें घरों में नमाज़ों का ख़ास एहतिमाम करें ताकि बच्चे भी अपने सामने नमूने देखने वाले हों। उनका भी ख़ुदा तआला पर ईमान और यक़ीन बढ़े। घरों में दर्स का चन्द मिनट के लिए सिलसिला जारी रहेता कि दीनी इलम भी बढ़े और इलम तथा मार्फ़त भी बढ़े। इसी तरह एम टी ए के प्रोग्रामों को देखने की तरफ़ भी तवज्जा रखें।

पहले भी मैं इस बारे में कह चुका हूँ।

अत: लॉक डाउन के बाद और न ही रमज़ान के बाद इन नेकियों को हम में से किसी को भूलना चाहिए बल्कि जारी रखना चाहिए। कभी किसी अहमदी को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर अपने अन्दर पाक तब्दीलियां पैदा करने का अह्द करता है अपने बैअत के वादा को भूलना नहीं चाहिए। मोमिन का यह काम नहीं कि कभी उन लोगों में शामिल हो जिनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुश्किल में गिरफ़्तार हों तो अल्लाह तआला की तरफ़ झुकते हैं, इस की पनाह में आने की कोशिश करते हैं, इस से मदद मांगते हैं, उसे पुकारते हैं और जब तकलीफ़ दूर हो जाए तो ख़ुदा तआला को भूल जाते हैं।

आजकल लोग इस तलाश में हैं कि यह कोरोना वाइरस की बीमारी तिब्बी घटना है या अज़ाबे इलाही है। इस किस्म की आफ़ात और महामारियां जो आती हैं उनमें एक मोमिन का काम है कि पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला की तरफ़ झुके। सिर्फ इसी की तलाश में न रहे कि यह क्या चीज़ है? और यह ज़माना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना है इस में अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ बेशुमार वादे हैं जो पूरे हुए और हो रहे हैं और भविष्य में भी होंगे। अगर कोई डराने वाली बातें हैं तो सबसे पहले एक मोमिन का काम है कि भयभीत हो। ख़ौफ़ज़दा हो और अपने ईमान तथा विश्वास को मज़बूत करे। अपने अच्छे अंजाम के लिए दुआ करे। असल चीज़ यही है कि अंजाम अच्छा हो। मैंने कई बार बताया है कि ये आफ़तें और तूफ़ान और बलाऐं जो इस ज़माने में आ रही हैं उनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने से ख़ास सम्बन्ध है। अत: हमें अपने ईमान तथा विश्वास और अंजाम अच्छा होने के लिए भी बहुत दुआएं करनी चाहिऐं और दुनिया के बचाने के लिए भी दुआएं करनी चाहिऐं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त भी जब अल्लाह तआला ने ताऊन को निशान के तौर पर ज़ाहिर होने की आप को स्पष्ट ख़बर दी थी बेचैन हो हो कर दुनिया के लिए दुआ किया करते थे। बंद दरवाज़ों के पीछे से आप की दुआओं की हालत को सुनने वाले वर्णन करते हैं कि इस तरह रोने की आवाज़ें आ रही होती थीं जैसे कि आग पर रखी हुई हंडिया में पानी के उबलने की आवाज़ें आती हैं कि इन्सानियत को अल्लाह तआला बचा ले।

(उद्धरित ख़ुदा तआला दुनिया की हिदायत के लिए हमेशा नबी मबऊस फ़रमाता है, अनवारुल उलूम भाग18 पृष्ठ 514)

(उद्धरित रजिस्टर रिवायात (अप्रकाशित भाग 7 पृष्ठ107 रवायात हज़रत मास्टर मुहम्मद अल्लाह दाद साहिब रज़ि)

अत: इन्सानियत के लिए आप का रहम और दया अल्लाह तआला के आप को निशान के बताने के बावजूद ग़ालिब था और उनके इस बीमारी की तबाही से बचने के लिए, इस वबा की तबाही से बचने के लिए आप दुआ कर रहे होते थे। अत: बड़े दर्द से दुआ कर रहे होते थे। अत: हमने भी आप के इस नमूने को देखना है

कई लोग हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तआला के एक निबन्ध 'हवादिस तबी या अज़ाब इलाही 'को ले कर आज कल जो वाइरस की वबा फैली हुई है इस से मिलाने की कोशिश करते हैं और अपने तबसरे भी करते हैं। वाज़िह हो कि जैसा कि मैं कह चुका हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने के बाद आफ़ात और बलाओं की संख्या बढ़ी है और इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट फ़रमाया हुआ है कि ये आएंगी और तबाहियां आएंगी । इस में तो कोई शक नहीं लेकिन जैसा कि मैं पिछले ख़ुत्बों में वर्णन कर चुका हूँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया है कि कई ईमान वाले भी कानूने क़ुदरत के तहत उस की लपेट में आ जाते हैं लेकिन उनका मुक़ाम शहीद का होता है और उनका अन्जाम बख़ैर अच्छा है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 252)

और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार भी उनका अन्जाम उन्हें जन्नत में ले जाने वाला होता है जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस जनाज़े पर लोग इस आदमी की तारीफ़ करें, उस की ख़िदमात की तारीफ़ करें, उस के हुक़ूक़ुल ईबाद और हुक़ूक़ अल्लाह की अदायगी की गवाही दें और तारीफ़ करें इस पर जन्नत वाजिब हो गई है।

(सही मुस्लिम किताबुल जनायज़ बाब फी मन यसमनी अलैहि ख़ैर औ शर मिनल मौता हदीस 949)

और हम देखते हैं कि बहुत सारे लोग हैं, कई ऐसे अहमदी मुख़लसीन हैं जिनके बारे में हर एक की यही विचार थे लेकिन इन महामारियों के प्रभावों को देखने वाली जो असल चीज़ है वह यह है कि इस से उमूमी तौर पर दुनियादारों पर क्या प्रभाव हो रहा है। दुनियादारों के तो होश गुम रहे हैं और होते हैं और आजकल यह दुनिया में हम देख रहे हैं कि किस तरह उनकी हालत हो चुकी है। न केवल लोगों की बल्कि बड़ी बड़ी हुकूमतों की, बड़े बड़े पहाड़ों की, हुकूमतें जो अपने आपको पहाड़ों की तरह मज़बूत समझती हैं। इन बड़ी बड़ी मज़बूत हुकूमतों की आर्थिकता और प्रणाली अस्त व्यस्त हो गए हैं और इस के असर से अपनी अवाम का ध्यान फेरने के लिए जो कोशिश वे कर रहे हैं वह और भी ज़्यादा ख़तरनाक है। वह उनको जंग और आर्थकिता की और अधिक तबाही में धकेल देगी। अत: जब तक ये लोग अपने अन्दर ऐसी तबदीली पैदा नहीं करेंगे जिससे फसादों की कैफ़ीयत दूर न हो तो एक के बाद दूसरी तबाही में ये लोग ख़ुद डूबते चले जाऐंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही फ़रमाया है कि मुस्लमान होना या मज़हबी ग़लतियों का न होना या मज़हबी ग़लतियों का जो बदला है यह तो क़यामत के दिन है, अल्लाह तआला उस वक़्त देखेगा लेकिन फ़ित्ना तथा फ़साद और हुक़ूक़ छीनना और ख़ुदा के बंदों का उपहास करना यह बेचैन करने वाली तबाहियां लाता है

(उद्धरित कश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 5)

बहरहाल हमारा काम दुआ करना और दुनिया को समझाना और अपनी अवस्थाओं को पवित्र बनाना है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे के जिस निबन्ध की मैंने बात की है वह लम्बा मज़मून है लेकिन हर अहमदी को जिस बात की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए इस मज़मून के पढ़ने से वह सिर्फ यह नहीं कि पहली क़ौमों के साथ क्या हुआ या अब क्या होगा या क्या हो रहा है और क्या तबाही है और क्या नहीं। यक़ीनन ये बातें भी भयभीत करने वाली होनी चाहिऐं। अपनी हालतों की तरफ़ तवज्जा देने वाली होनी चाहिऐं लेकिन जो असल बात है जो शब्द ध्यान देने योग्य हैं वह यह है जो कि आप ने लिखा हुआ है कि जमाअत अहमदिया के लिए इस में चेतावनी और खुशखबरी भी है

चेतावनी यह कि सिर्फ अहमदेत का नाम बचाने के लिए काफ़ी नहीं होगा बल्कि तक़्वा की शर्त भी साथ लगी हुई है और बिशारत का पहलू यह है कि जमाअत में जो व्यावहारिक कमज़ोरियाँ आ चुकी होंगी बड़ी तेज़ी के साथ उनके सुधार की कोशिश अहमदी करेगा। अत:सार यह कि जिन्हों ने बैअत का सिर्फ नाम लगाया हुआ है, एक लेबल (label)है वह आप की पवित्र शिक्षा की तरफ़ लौटेंगे तो फिर ही बचत है और ख़ुदा की तरफ़ यह लौटना ही उनके लिए बशारत है वर्ना कोई बिशारत नहीं।

(उद्धरित हवादिस तबी या अज़ाबे इलाही पृष्ठ121)

और जैसा कि मैंने कहा था कि इन दिनों में जो विशेष ध्याना पैदा हुआ है उसे अब क़ायम रखें और ख़ुद भी और अपने बच्चों को भी अल्लाह के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों के अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाएँ क्योंकि दुनिया की तबाही के बाद ख़ुदा तआला की तरफ़ जब दुनिया की नज़र होगी, तवज्जा होगी, हुक़ूक़ की अदायगी की तरफ़ जब नज़र होगी तो फिर लोग जमाअत की तरफ़ ही देखेंगे, फिर अहमदी ही होंगे जो दुनिया की सही रहनुमाई कर सकेंगे लेकिन इस से पहले हमें दर्द के साथ यह दुआ करनी चाहिए कि वह नौबत ही न आए जब दुनिया इस सीमा तक आगे चली जाए कि वहां से रोशनी और अमन की तरफ़ आने के रास्ते ही बंद हो जाएं। इस से पहले ही लोगों की नज़र इस तरफ़ फिर जाए। अत: हमें दुआओं के साथ अपने नमूने भी दिखाने की ज़रूरत है, दुनिया को बताने की ज़रूरत है कि एक दूसरे के हक़ अदा कर के ही तुम अल्लाह तआला के रहम को प्राप्त कर सकते हो और ख़ुदा तआला जो एक ख़ुदा है इस का रहम प्राप्त किए बग़ैर न दुनिया में अमन क़ायम करने के लिए हमारी कोशिश कामयाब हो सकती है और न मरने के बाद अंजाम अच्छा हो सकता है

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन दिनों में जहां जमाअत के लोग इबादतों की तरफ़ तवज्जा दे रहे हैं वहां नौजवान भी और सेहतवाले अन्सार भी और लजना भी ख़िदमते ख़लक़ के काम भी कर रहे हैं। इस बारे में भी हर जगह से बड़ी अच्छी रिपोर्टें आ रही हैं। यह ख़िदमते ख़लक़ कई भटके हुओं को, दुनियादारों को रास्ते दिखाने का भी कारण बन रहा है।

पिछले दिनों कैनेडा की रिपोर्ट थी कि एक औरत ने रात दो बजे ख़ुद्दाम की जो पड़ासियों की हेल्पलाइन है इस को हर जगह से निराश हो कर फ़ोन किया कि यह मेरी मजबूरी है, मेरा लड़का बीमार है और दवाई हासिल करने के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं, हर जगह से इन्कार हो गया है। वह कहती थी सबने यही कहा है कि सुबह से पहले नहीं मिल सकती और इस की बहुत बुरी हालत है। वह कहती है कि मैंने कहा कि लोग कहते हैं ख़ुदा है। यद्यपि मैं ख़ुदा को नहीं मानती चलो आज आज़माते

हैं। कहती है मैंने इंतिहाई वेदना और व्याकुलता की हालत में कहा कि हे ख़ुदा अगर तू है तो मेरा बेटा इस बुरी हालत में है इस की दवाई का प्रबन्ध कर दे और साथ ही कहती है कि मुझे ख़ुद्दाम की हेल्पलाइन (helpline)का भी ख़्याल आया। फ़ोन किया तो किसी आदमी ने फ़ोन उठाया। उसे अपनी ज़रूरत बताई तो उसने कहा कोशिश करता हूँ। थोड़ी देर के बाद फिर उसी आदमी का फ़ोन आया कि इस वक़्त रात के दो बजे हैं इंतिज़ाम मुश्किल है। इस शख़्स ने कहा कि तुम्हारे लड़के की हालत किया है? मैंने फिर सारी अवस्था बताई और बड़ी बेचैनी का इज़हार किया तो उसने कहा अच्छा मैं ख़ुद जाकर देखता हूँ ,किसी जगह जा के देखता हूँ। एक फार्मेसी अमुक जगह पर खुली होती है। अगर खुली हुई तो दवाई ले आता हूँ। वह रात को उठ के गया। कहती है इस को जब मैंने जगाया था तो वह नींद की हालत में था लेकिन फिर भी वह पच्चास किलोमीटर का सफ़र कर के गया और मुझे दवाई ला कर दी। इस बात से मुझे ख़ुदा के होने का यक़ीन आ गया और ये यक़ीन अहमदी ख़ादिम की वजह से मुझे मिला और मैं इस के लिए शुक्रगुज़ार हूँ।

अत: इन दिनों में हम ख़िदमते इन्सानियत कर के बंदों को ख़ुदा के क़रीब लाने का भी ज़रीया बन सकते हैं उस के लिए हम में से हर एक को कोशिश करनी चाहिए। न यह कि यह देखते रहें कि तबाही आती है या नहीं आती। और फिर रमज़ान में जो सबक़ हमें दूसरों की तकलीफ़ का एहसास करने का मिला है उसे भी जारी रखना चाहिए कि हमेशा दूसरों की तकलीफ़ का एहसास करते रहें क्योंकि रमज़ान के उद्देश्यों में से एक यह भी है कि यह एहसास दिलाया जाए कि दूसरों की तकलीफ़ का एहसास करो।

अत: एक दुनिया का माहौल जो उमूमी तौर पर इस महामारी की वजह से बना हुआ है और एक रमज़ान का माहौल अब हमें हमेशा अपनी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाने वाला बना रहना चाहिए। रमज़ान तो कल या परसों चला जाएगा, ख़त्म हो जाएगा लेकिन इस की नेकियां हमें हमेशा अपने अंदर रखनी चाहिऐं। वह पाक तब्दीलियां जो हमने की हैं वह हमेशा अपने अंदर रखनी चाहिऐं और फिर जब लॉक डाउन में नर्मी आए तो हमें अपनी ज़ाती भी और इन्सानियत के लिए भी ज़िम्मेदारीयों को नहीं भूलना चाहिए। हमेशा याद रखना चाहिए जहां ख़ुद अल्लाह तआला का हक़ और बंदों का हक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दें वहां दूसरों को भी इस तरफ़ तवज्जा दिलाते रहें और अपने पवित्र नमूनों से दुनिया को ख़ुदा तआला और इस की मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करने वाला बनाने की कोशिश करें। हमने इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है। आप की कोई मज्लिस ऐसी नहीं होती थी जहां आप अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की रोशनी में हमारे मुक़ाम तथा स्तर की तरफ़ तवज्जा दिलाने की कोशिश न हों।

अत: हमें हरवक़त आपकी नसीहतों की जुगाली करते रहना चाहिएता कि हक़ीक़ी ईमान तथा विश्वास हमें हासिल हो। दूसरों की कमज़ोरियों की तरफ़ नज़र रखने की बजाय हम अपनी हालतों का जायज़ा लेते रहें। इस हवाले से इस वक़्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई हवाले भी आपके सामने पेश करूँगा जिन पर हमें ग़ौर करते रहना चाहिए। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें किस स्थान और स्तर पर देखना चाहते हैं। एक जगह हमारे इस स्तर का ज़िक्र फ़रमाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

चाहिए कि हर एक शख़्स तहज्जुद में उठने की कोशिश करे और पाँच वक़्त की नमाज़ों में भी क़नूत मिला दें। हर एक ख़ुदा को नाराज़ करने वाली बातों से तौबा करें। तौबा से यह मुराद है कि उन समस्त बुरे कामों और ख़ुदा की न रजामंदी के कारणों को छोड़कर एक सच्ची तबदीली करें और आगे क़दम रखें और तक़्वा धारण करें। इस में भी ख़ुदा का रहम होता है।' फ़रमाया "इन्सानी आदतों में आचरण पैदा करें। ग़ज़ब न हो। विनय और विनम्रता इस की जगह ले ले। अख़लाक़ की दुरुस्ती के साथ अपने मक़दूर के अनुसार सदक़ों का देना भी करो।"

يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا

(अद्दहर 9)

अर्थात ख़ुदा की रज़ा के लिए मिस्कीनों और अनातों और कैदियों को खाना देते हैं और कहते हैं कि ख़ास अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हम देते हैं और इस दिन से हम डरते हैं जो निहायत ही भयानक है।सारांश क़िस्सा दुआ से, तौबा से काम लो और सदक़े देते रहो ताकि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल तथा रहम के साथ तुमसे मामला करे।ञ

(मल्फ़ूज़ात भाग1 पृष्ठ 208 प्रकाशन 1984 ई)

फिर जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाया

"अल्लाह तआला किसी की पर्वा नहीं करता मगर सालिह बंदों की। आपस में भाईचारा और मुहब्बत को पैदा करो और दरिंदगी और मतभेद को छोड़ दो। हर एक किस्म के उपहास और ठट्ठा से पूरी तरह दूर हो जाओ क्योंकि उपहास इन्सान के दिल को सदकों से दूर कर के कहीं का कहीं पहुंचा देता है। आपस में एक दूसरे के साथ इज़्ज़त से पेश आओ। हर एक अपने आराम पर अपने भाई के आराम को प्राथमिकता दे। अल्लाह तआला से एक सच्ची सुलह पैदा कर लो और इस की इताअत में वापस आ जाओ। अल्लाह तआला का ग़ज़ब ज़मीन पर नाज़िल हो रहा है और इस से बचने वाले वही हैं जो कामिल तौर पर अपने सारे गुनाहों से तौबा कर के इस के हुज़ूर में आते हैं

तुम याद रखो कि अगर अल्लाह तआला के फ़रमान में तुम अपने आप को लगाओगे और इस के धर्म की हिमायत में कोशिश करने वाले हो जाओगे तो ख़ुदा तमाम रुकावटों को दूर कर देगा और तुम कामयाब हो जाओगे। क्या तुमने नहीं देखा कि किसान उम्दा पौधों के लिए खेत में से नाकारा चीज़ों को उखाड़ कर फेंक देता है और अपने खेत को ख़ुशनुमा दरख़्तों और फल वाले पौधों से सजाता है और उनकी हिफ़ाज़त करता और हर एक हानि और नुक़्सान से उनको बचाता है मगर वह दरख़्त और पौदे जो फल न लाएं और गलने और ख़ुश्क होने लग जाएं उनकी मालिक पर्वा नहीं करता कि कोई मवेशी आकर उनको खा जाए या कोई लकड़हारा उनको काट कर तनूर में डाल दे। अत: ऐसा ही तुम भी याद रखो अगर तुम अल्लाह तआला के समक्ष सच्चे ठहरोगे तो किसी का विरोध तुम्हें तकलीफ़ न देगा। पर अगर तुम अपनी हालतों को दरुस्त न करो और अल्लाह तआला से फ़रमांबर्दारी का एक सच्चा वाद न करो तो फिर अल्लाह तआला को किसी की परवाह नहीं।"

फ़रमाया '..... चाहिए कि तुम ख़ुदा के अज़ीज़ों में शामिल हो जाओ .... प्रत्येक आपस के झगड़े और जोश और शत्रुता को मध्य में से उठा दो कि अब वह वक़्त है कि तुम छोटी बातों से दबर हट कर के प्रमुख और महान कामों में व्यस्त हो जाओ। लोग तुम्हारा विरोध करेंगे।' फ़रमाया किसी की पर्वा ना करो। '....इस बात को वसीयत के तौर पर याद रखो कि हरगिज़ तोज़ी और सख़्ती से काम न लेना।' विरोध करेंगे लेकिन तुमने हरगिज़ तेज़ी और सख़्ती से काम नहीं लेना। "बल्कि नर्मी और प्यार से और आचरण से हर एक को समझाओ।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 266 से 268 प्रकाशन 1984 ई)

हमारी अख़लाक़ी हालतों का ठीक होना और हुक़ूक़ुल ईबाद की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर आप ने फ़रमाया

एक हदीस में आया है कि क़यामत में अल्लाह तआला कई बंदों से फ़रमाएगा कि तुम बड़े सम्माननीय हो और मैं तुम से बहुत ख़ुश हूँ क्योंकि मैं बहुत भूखा था तुमने मुझे खाना खिलाया। मैं नंगा था तुम ने कपड़ा दिया। मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं बीमार था तुमने मेरी इयादत की। वह कहेंगे कि हे अल्लाह तू तो इन बातों से पाक है। तो कब ऐसा था जो हमने तेरे साथ ऐसा किया? तब वह फ़रमाएगा कि मेरे अमुक़ अमुक़ बंदे ऐसे थे तुमने उनकी ख़बर-गैरी की। वह ऐसा मामला था कि गोया तुम ने मेरे साथ ही किया। फिर एक और गिरोह पेश होगा। उनसे कहेगा कि तुमने मेरे साथ बुरा ममला किया। मैं भूखा था तुमने मुझे खाना न दिया। प्यासा था पानी न दिया। नंगा था मुझे कपड़ा न दिया। मैं बीमार था मेरी इयादत न की। तब वो कहेंगे कि हे अल्लाह तू तो ऐसी बातों से पाक है। तू कब ऐसा था जो हमने तेरे साथ ऐसा किया? इस पर वो फ़रमाएगा कि मेरा अमुक़ अमुक़ बंदा इस हालत में था और तुमने उनके साथ कोई हमदर्दी और सुलूक न किया वह मानो मेरे ही साथ करना था।

यहां कोई शर्त नहीं है कि मुस्लमान है या हिन्दू है या ईसाई है या कौन है। फ़रमाया "अत: मानव जाति पर दया और इस से हमदर्दी करना बहुत बड़ी इबादत है और अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए यह एक ज़बरदस्त माध्यम है मगर मैं देखता हूँ कि इस पहलू में बड़ी कमज़ोरी ज़ाहिर की जाती है। दूसरों को हीन समझा जाता है। इन पर ठट्ठे किए जाते हैं। उनकी ख़बर लेने वाला और किसी मुसीबत और मुश्किल में मदद देना तो बड़ी बात है। जो लोग ग़रीबों के साथ अच्छे सुलूक से पेश नहीं आते बल्कि उनको हीन समझते हैं, मुझे डर है कि वह ख़ुद इस मुसीबत में पीड़ित न हो जाएं। अल्लाह तआला ने जिन पर फ़ज़ल किया है इस की शुक्रगुज़ारी यही है कि इस की मख़लूक़ के साथ एहसान और सुलूक करें और इस ख़ुदा तआला दिए गए फ़ज़ल पर गर्व न करें और जंगलियों की तरह गरीबों को कुचल न डालें।

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 102-103 प्रकाशन 1984 ई)

फिर इस की और अधिक व्याख्या फ़रमाते हुए आप हैं कि

"असल बात यह है कि सबसे मुश्किल और नाज़ुक अवस्था हुक़ूक़ुल ईबाद ही का है क्योंकि हरवक़्त इस का मामला पड़ता है और हर क्षण यह परीक्षा सामने रहती है। अत: इस स्तर पर बहुत ही होशियारी से क़दम उठाना चाहिए। मेरा तो ये मज़हब है कि दुश्मन के साथ भी हद से ज़्यादा सख़्ती न हो। कई लोग चाहते हैं कि जहां तक हो सके उस के अपमान और बर्बादी के लिए कोशिश की जाए। फिर वह इस फ़िक्र में पड़ कर जायज़ और नाजायज़ बातों की भी पर्वा नहीं करते। इस को बदनाम करने के लिए झूठे आरोप इस पर लगाते। इफ़्तिरा करते और इस की ग़ीबत करते और दूसरों को इस के ख़िलाफ़ उक्साते हैं। अब बताओ कि मामूली दुश्मनी से किस क़दर बुराईयों और बदियों का वारिस बना और फिर ये बुराइयां जब अपने बच्चे देंगी तो कहाँ तक हालत पहुँचेगी।"

और हम देख रहे हैं कि यही आजकल दुनिया का हाल हो रहा है। व्यक्तिगत तौर पर भी और सामूहिक तौर पर भी और क़ौमी और हुकूमती तौर पर भी। फ़रमाया कि ''मैं सच कहता हूँ कि तुम किसी को अपना ज़ाती दुश्मन न समझो और इस द्वेष की आदत को बिलकुल छोड़ दो। अगर ख़ुदा तआला तुम्हारे साथ है और तुम ख़ुदा तआला के हो जाओ तो वह दुश्मनों को भी तुम्हारे खादिमों में दाख़िल कर सकता है लेकिन अगर तुम ख़ुदा ही से सम्बन्ध विच्छेद किए बैठे हो और इस के साथ ही कोई रिश्ता दोस्ती का बाक़ी नहीं। इस के ख़िलाफ़ मर्ज़ी तुम्हारा चाल चलन है। फिर ख़ुदा से बढ़कर तुम्हारा दुश्मन कौन होगा? मख़लूक़ की दुश्मनी से इन्सान बच सकता है लेकिन जब ख़ुदा दशमन हो तो फिर अगर सारी मख़लूक़ दोस्त हो तो कुछ नहीं हो सकता। इसलिए तुम्हारा तरीक़ा अंबिया अलैहिमुस्सलाम का सा तरीक़ हो। ख़ुदा तआला की इच्छा यही है कि ज़ाती शत्रुता कोई हो।

ख़ूब याद रखो कि इन्सान को सम्मान और सौभाग्य तब मिलता है जब वह ज़ाती तौर पर किसी का दुश्मन न हो। हाँ अल्लाह और इस के रसूल की इज़्ज़त के लिए अलग बात है अर्थात जो आदमी ख़ुदा और इस के रसूल की इज़्ज़त नहीं करता बल्कि उनका दुश्मन है उसे तुम अपना दुश्मन समझो।' लेकिन इस दुश्मनी के समझने की भी वज़ाहत फ़र्मा दी। फ़रमाया ''उस दुश्मनी समझने के यह अर्थ नहीं हैं कि तुम इस पर झूठ बोलो और बिना कारण उस को दुख देने के षयन्त्र करो। नहीं। बल्कि इस से अलग हो जाओ और ख़ुदा तआला के सपुर्द करो। मुम्किन हो तो इस का सुधार के लिए दुआ करो। अपनी तरफ़ से कोई नई भाजी उस के साथ शुरू न करो।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृश्ठ 104-105 प्रकाशन 1984 ई)

फिर अख़लाक़ी मयारों की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं

" ''अख़लाक़ी हालत ऐसी ठीक हो कि किसी को नेक नीयती से समझाना और ग़लती से आगाह करना ऐसे वक़्त पर हो कि उसे बुरा मालूम न हो। किसी को हीनता की नज़र से न देखा जाए। दिल न तोड़ा जाए। जमाअत में आपस में झगड़े फ़साद न हों। धर्म के ग़रीब भाईयों को कभी हीनता की निगाह से न देखो। माल तथा दौलत या वंश की बुज़ुर्गी पर व्यर्थ में गर्व कर के दूसरों को अपमानित और तुच्छ न समझो। ख़ुदा तआला के नज़दीक सम्माननीय वही है जो मुत्तक़ी है। फ़रमाया है।

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ (अलहजरात14)

दूसरों के साथ भी पूरे अख़लाक़ से काम लेना चाहिए। जो बुरे आचरण का नमूना होता है वह भी अच्छा नहीं। हमारी जमाअत के साथ लोग मुक़द्दमा करने का सिर्फ बहाना ही ढूंढते हैं। लोगों के लिए एक ताऊन है। हमारी जमाअत के लिए दो ताऊन हैं। अगर कोई जमाअत में से एक शख़्स बुराई करेगा तो इस एक से सारी जमाअत पर आपत्ति आएगी। दानिशमंदी, विनय और क्षमा के शक्ति को बढ़ाओ। नादान से नादान की बातों का जवाब भी संजीदगी और अच्छी भाषा से दो। बकवास का जवाब बकवास न हो।' फ़रमाया कि ''... उचित है कि इन परीक्षा के दिनों में अपने नफ़्स को मार कर तक़्वा धारण करें। मेरा उद्देश्य इन बातों से यही है कि तुम नसीहत और इबरत पकड़ो। दुनिया नश्वरता का स्थान है, आख़िर मरना है। ख़ुशी धर्म की बातों में है। असली मक़सद तो धर्म ही है।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 208-209)

फिर एक और अवसर पर जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि

''हमारी जमाअत को ऐसा होना चाहिए कि केवल लफ़्फ़ाज़ी पर न रहे बल्कि बैअत के सच्चे उद्देश्य को पूर करने वाली हो''।(हमारी जमाअत को ऐसा होना चाहिए कि केवल मुंह की बातों पर न रहे बल्कि बैअत की सच्ची इच्छा को पूर करने वाली हो।''अंदरूनी तब्दीली करनी चाहिए। सिर्फ मसाइल से तुम ख़ुदा तआला को ख़ुश नहीं कर सकते।' कि मसाइल जान लिए। यह नहीं। इस से अल्लाह तआला ख़ुश नहीं होगा। ''अगर अंदरूनी तब्दीली नहीं तो तुम में और तुम्हारे ग़ैर में कुछ फ़र्क़ नहीं। अगर तुम में धोखा, फ़रेब, कमज़ोरी और सुस्ती पाई जाए तो तुम दूसरों से पहले हलाक किए जाओगे। हर एक को चाहिए कि अपने बोझ को उठाए और अपने वादा को पूरा करे। उम्र का भरोसा नहीं।' फ़रमाया ''& जो आदमी समय से पहले नेकी करता है उम्मीद है कि वह पवित्र हो जाए। अपने नफ़्स की तब्दीली के लिए कोशिश करो। नमाज़ में दुआएं माँगो। सदक़ात ख़ैरात से और दूसरे हर तरह की कोशिशों से।

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا (अल-अनकबूत 70)

में शामिल हो जाओ। जिस तरह बीमार डाक्टर के पास जाता, दवाई खाता, कब्ज़ दूर करने वाली दवाई लेता, ख़ून निकलवाता, टकोर करवाता और शिफ़ा हासिल करने के लिए हर तरह की कोशिश करता है इसी तरह अपनी रुहानी बीमारीयों को दूर करने के लिए हर तरह कोशिश करो। सिर्फ ज़बान से नहीं बल्कि चेष्ठा के जिस क़दर तरीक़े ख़ुदा तआला ने फ़रमाए हैं वे सब करो। सदक़ा ख़ैरात करो। जंगलों में जा कर दुआएं करो।' फ़रमाया कि ''... अल्लाह तआला कोशिश करने वाले को पसंद करता है। जब इन्सान समस्त कोशिशों को करता है तो कोई न कोई निशाना भी हो जाता है।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 188-189 प्रकाशन1984 ई)

अर्थात निशान भी हो जाता है। अर्थात इन दिनों में ख़ास तौर पर जबकि पाकिस्तान और कई देशों में अहमदियों के ख़िलाफ़ एक उबाल उठा हुआ है। हमें अल्लाह तआला के फ़ज़ल और रहम को जज़्ब करने के लिए हर किस्म की चेष्ठा करने की कोशिश करनी चाहिए। दुश्मन जब अपनी दुश्मनी में चरम को पहुंचा हुआ है तो हमें भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और रहम को जज़्ब करने के लिए पहले से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए।

इसी तरह इस ज़माना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुक़ाम तथा मर्तबा और आप के आचरण की हक़ीक़त हम पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट फ़रमाई कि यह जो सारी चीज़ें हैं, यह उच्च आचरण, अल्लाह तआला के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ को अदा करना यह आप के आदर्श पर चल कर ही हो सकते हैं और हमें बार-बार यही फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मार्ग को न छोड़ो। इस बारे में नसीहत करते हुए एक अवसर पर आप ने फ़रमाया कि

''मैं यह भी तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि बहुत से लोग हैं जो अपने बनाए हुए वज़ीफ़ों और और विर्दों के माध्यम से उन कमालों को प्राप्त करना चाहते हैं या ख़ुदा तआला के साथ सच्चा सम्बन्ध पैदा करना चाहते हैं लेकिन मैं तुम्हें कहता हूँ।'अर्थात अपने बनाए हुए जो विर्द हैं उनके माध्यम से अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा करना चाहते हैं फ़रमाया कि मैं तुम्हें बताता हूँ, ''मैं तुम्हें कहता हूँ कि जो तरीक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धारण नहीं किया वह केवल मात्र व्यर्थ है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर मुनइम अलैहिम के मार्ग का सच्चा अनुभवी और कौन हो सकता है जिन पर नबुव्वत के भी सारे कमालात ख़त्म हो गए। आप ने जो तरीका धारण किया वह बहुत ही सही और सब से करीब है। इस मार्ग को छोड़कर दूसरा रास्ता ईजाद करना चाहे वह बज़ाहिर कितनी ही अच्छे दिखने वाला मालूम होता हो मेरी राय में हलाकत है और ख़ुदा तआला ने मुझ पर ऐसा ही ज़ाहिर किया है।'

(मल्फ़ूज़ात भाग1 पृष्ठ 355 प्रकाशन 1984 ई)

हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलग करने वालों की यही हालत नज़र आती है कि पीरों फ़क़ीरों और तथा कथित उल्मा की ग़लत व्याख्याओं से इस्लाम की शिक्षा का कुछ से कुछ बिगाड़ दिया है और फिर भी अपने आपको वास्तिवक मुस्लमान कहते हैं और हमें इस्लाम के दायरा से ख़ारिज करते हैं। फिर उस मुक़ाम मुहम्मदी को अधिक खोल कर वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्ची अनुकरण से ख़ुदा मिलता है और आप के अनुकरण को छोड़कर चाहे कोई सारी उम्र टक्करें मारता रहे गौहरे मक़सूद उस के हाथ नहीं आ सकता। अत: सादी भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण की ज़रूरत इन स्पष्ट शब्दों में करते हैं।'' फ़ारसी का शेअर है

''बज़ुहद व रअ कूश व सिदक़ वसफ़ा
व लेकिन मीफ़ज़ाए बर मुस्तफ़ा'

(कि पवित्रता तथा तक़्वा और सच्चाई एवं पाकीज़गी के लिए ज़रूर कोशिश करो

मगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीक़ से आगे न बढ़ो। ''आँहज़रत सिल्ली अल्लाह अलैहि वाला वसल्लम की राह को हरगिज़ न छोड़ो। मैं देखता हूँ कि क़सम किस्म के वज़ीफ़े लोगों ने ईजाद कर लिए हैं। उल्टे सीधे लटकते हैं और जोगियों की तरह राहिबाना तरीक़े धारण किए जाते हैं लेकिन ये सब लाभहीन हैं। अंबिय की यह सुन्नत नहीं कि वे उल्टे सीधे लटकते रहें या नफ़ी इस्बात के ज़िक्र करें और अर्रह के ज़िक्र करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसीलिए ऐसा फ़रमाया''(आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी कारण से उत्ताम आचरण फरमाया।) لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ۔ (अलअहज़ाब 22) अर्थात तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ही उस्वा हसना है। फ़रमाया ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नक़श क़दम पर चलो और एक कण भर भी इधर या उधर होने की कोशिश न करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग1 पृष्ठ 356 प्रकाशन1984 ई)

फिर फ़रमाते हैं "अत: इनाम वाले लोगों में जो कमालात हैं और صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ(अल्फातिहा 7)में जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला ने इशारा फ़रमाया है उनको प्राप्त करना हर इन्सान का मूल मक़सद है और हमारी जमाअत को ख़ु-सूसीयत से इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला ने इस सिलसिला के क़ायम करने से यही चाहा है कि वह ऐसी जमाअत तैयार करे जैसी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तैयार की थी ताकि इस आख़िरी ज़माना में यह जमाअत क़ुरआन शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई और महानता पर बतौर गवाह ठहरे।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 356 प्रकशान1984 ई)

अत: हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तिवक अनुकरण करने वालों में शामिल हैं और इसी में हमारी बका है कि आप के सच्चे ग़ुलाम की बैअत में आकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी अमुकरण करने वालों में शामिल हों और आप के आदर्श को अपनी समस्त सलाहियतों के साथ अपनाने की कोशिश करें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श और आप के हुक्मों पर अनुकरण कर के इनाम पाने वाले गिरोह में शामिल हों और इस गिरोह के बुरे प्रभावों से हमेशा बचे रहें जो अल्लाह तआला का ग़ज़ब सहेड़ने वाला और गुमराह है। अपनी नमाज़ों में विशेष ज़ौक़ तथा शौक़ पैदा करने वाले हों। अल्लाह तआला और इस के रसूल के हुक्मों पर चलते हुए हमेशा अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारने वाले हों।

असीरान राहे मौला के लिए भी दुआएं करें और असीरान में से कई जिन पर ज़ालिमाना तौर पर बड़ी सख़्त दफ़आत लगाई गई हैं उनके लिए खासतौर पर दुआ करें। पिछले दिनों एक अहमदी औरत रमज़ान बी-बी साहिबा को तौहीन रिसालत की दफ़ा लगा कर जेल में डाल दिया गया है। इस ख़ानदान ने शायद 2002 ई में बैअत की थी। उनके पति ने मुझे लिखा कि हम क़ुर्बानी से नहीं डरते और न जेल में जाने का ग़म है। मेरी बीवी को और मुझे जो ग़म है तो इस बात का है कि जिस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त तथा नामूस के लिए हम मर मिटने वाले हैं इस की तौहीन का हम पर इल्ज़ाम लगाया गया है। यह दर्द है हमें। अत: उनको भी और उन कौदियों को भी जिनको इस इल्ज़ाम में सज़ा मौत सुनाई गई है उनको हमेशा दुआओं में याद रखें। अल्लाह तआला उन सब की मोजज़ाना रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए और अपना रहम फ़रमाए। अदालत और हुकूमत को तौफ़ीक़ दे कि वह इन्साफ़ पर क़ायम हूँ। ख़ुदा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेते हैं तो ख़ुदा और इस रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी ख़ौफ़ और मुहब्बत भी उनमें पैदा हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर अनुकरण करने वाले भी हूँ।

और इस के इलावा भी मैं कई दुआओं की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता हूँ। अल्लाह तआला हम में से हर एक को तौफ़ीक़ दे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की बिअसत के मक़सद को पहचानने वाले हों। अल्लाह तआला और इस के रसूल हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत समस्त मुहब्बतों पर ग़ालिब हो। इस्लाम की वास्तिवक शिक्षा पर हम अनुकरण करने वाले हों। हमारे घर प्यार और मुहब्बत के नमूने हों। जो बच्चे अपने माँ बाप के आपस के झगड़ों से परेशान हैं अल्लाह तआला उनकी परेशानियाँ भी दूर फ़रमाए। समस्त वाक़फ़ीन ज़िन्दगी के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें बेनफ़्स हो कर धर्म की सेवा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और वह अपना वक़्फ़ निभाने वाले हों। वाक़फ़ीन नौ के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें अपने और अपने माँ बाप के वादा को पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। शुहदाए अहमिदयत और उनके ख़ानदानों के लिए दुआ करें। मुश्किलों में घिरे हुए समस्त अहमदियों के लिए दुआ करें। एक दूसरे के लिए और अपने लिए भी दुआएं करें। दूसरों के लिए दुआएं करना, एक दूसरे के लिए जो दुआएं हैं ये फिर अपने लिए भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हासिल करने वाला बनाती हैं। बच्चियों के रिश्तों के लिए दुआएं करें खासतौर पर इन बच्चियों के लिए जिनके रिश्तों में बिना किसी कारण के देरी हो रही है। इन हालात में और इस के बाद जो दुनिया के आर्थिक हालात होने हैं उस के बुरे प्रभावों से हर अहमदी के महफ़ूज़ रहने के लिए दुआ करें। इन हालात की वजह से जमाअत के कामों और मन्सूबों में भी कोई रोक पैदा न हो और अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से जमाअत की तरक़्क़ी के सामान मुहय्या फ़रमाता रहे। इन हालात में माली क़ुर्बानी करने वालों के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उनके अम्वाल तथा नफ़ूस में बे-इंतिहा बरकत दे। एम टी ए के कारकुनों के लिए भी दुआएं करें। उनमें से वालंटेयरज़ (volunteers)भी हैं और कारकुन भी हैं। ये बड़ी मेहनत से अपनी सेवाएं कर रहे हैं और इस्लाम का पैग़ाम दुनिया में फैला रहे हैं। इस्लामी जगत के लिए दुआ करें। उनके आपस के झगड़े भी ख़त्म हों और वे लोग अमन के साथ रहना सीखें और इस्लाम विरोधी ताक़तों की बुराई से अल्लाह तआला उनको महफ़ूज़ रखे और यह उसी वक़्त हो सकता है जब उनके आपस के मतभेद हों।

कई और दुआएं भी मैं इस समय पढ़ूँगा वे भी आप मेरे साथ दोहराते रहें।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ۔

(सुनन अबू दाऊद किताबुल वितर बाब मा यकूलुर्रजुलो इज़ा ख़ाफ क़ौमा हदीस1537)

हम तुझे उनके सीनों में रखते हैं अर्थात तेरा रोब उनके सीनों में भर जाए और हम उनके शर से तेरी पनाह चाहते हैं।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ۔

(सही अल-बुख़ारी किताबुल दावात बाब अद्दुआ इन्दल करब हदीस 6346)

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और वह सम्मान वाला और बड़ा ही बुर्दबार है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वही अर्श का रब है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो कि आसमान तथा ज़मीन और सम्माननीय अर्श का रब है।

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ۔

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुल क़द्र हदीस 2140)

हे दिलों के फेरने वाले मेरे दिल को अपने धर्म पर साबित क़दम रख।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى۔

(सही मुस्लिम किताबुल ज़िकर 2721)

हे अल्लाह मैं तुझसे हिदायत, तक़्वा, पवित्रता और ग़िना मांगता हूँ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سُخْطِكَ۔

अल्लाह तआला का उपदेश

(आले इम्रान 17) رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

(सही मुस्लिम किताबुल रिक़ाक हदीस 2739)

हे अल्लाह मैं तेरी नेअमत के नष्ट हो जाने, तेरी आफ़ियत के हट जाने, तेरी अचानक सज़ा और उन सब बातों से पनाह मांगता हूँ जिनसे तू नाराज़ हो।

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल-आराफ़ 24)

हे हमारे रब हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर घाटा पाने वालों में होंगे।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ۔ (आले इम्रान 9)

हे हमारे रब हमारे दिल टेढ़े न कर देना इस के बाद जो तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने हुज़ूर से रहमत प्रदान करना। यक़ीनन तू बहुत प्रदान करने वाला है।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अल-बकर:202)

अर्थात हे हमारे रब हमें दुनिया में भी कामयाबी प्रदान कर और आख़िरत में भी कामयाबी दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ है कि

हे रब्बुल आलमीन मैं तेरे एहसानों का शुक्रिया अदा नहीं कर सकता। तू निहायत ही रहीम करीम है। तेरे असीमित मुझ पर उपकार हैं। मेरे गुनाह बख़श ताकि मैं हलाक न हो जाऊं। मेरे दिल में अपनी ख़ालिस मुहब्बत डाल ताकि मुझे ज़िन्दगी प्राप्त हो और मेरी पर्दापोशी फ़र्मा और मुझसे ऐसे कर्म करा जिनसे तो राज़ी हो जाए। मैं तेरे सम्माननीय चेहरे के साथ इस बात से भी पनाह मांगता हूँ कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर आए । रहम फ़र्मा , रहम फ़र्मा, रहम फ़र्मा और दुनिया तथा आख़िरत की बलाऊँ से मुझे बचा क्योंकि हर एक फ़ज़ल तथा करम तेरे ही हाथ है। आमीन

(उद्धरित मक्तूबात अहमद भाग 2 पृष्ठ 159 मकतूब बनाम हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ि मकतूब नम्बर 3)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

इस रमज़ान का यह आख़िरी जुमा है इस रमज़ान में जो नेक काम हमसे हुए या जो तब्दीलियां हमने पैदा की हैं अल्लाह तआला उनको जारी रखने की हमें तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और यह दुआएं भी हमारे हक़ में क़बूल फ़रमाए।

ईद के बारे में भी ऐलान कर दूं कि बहुत सारे लोगों ने मुझे लिखा कि यहां की जो वेबसाइट है इस के अनुसार तो चौबीस को ईद कर रहे हैं। चौबीस को ईद नहीं बनती। रविवार को चांद नज़र नहीं आ सकता। फिर मैं ने दोबारा लिखा। और दो बार, तीन बार यहां जो हमारे माहिरीन हैं उनकी भी दोबारा मीटिंग करवाई। फिर इस में कुछ और भी शामिल किए। अमीर साहिब को मैंने कहा था ख़ुद भी देखें। फिर उन्होंने एक नक़्शा बना के मुझे भेजा इस में जो वेबसाइट पर बड़े शहर हैं उनमें तो यक़ीनन 23 तारीख़ को चांद नज़र नहीं आ सकता लेकिन जो उन्होंने नक़्शा बना के भेजा है इस के अनुसार उनमें कई इलाक़े हैं, फ़ालिमथ (Falmouth)और पेनज़ेंस (Penzance) और हील (Hale) यह इलाक़े हैं जहां खुली-आँख से 23 तारीख़ को चांद नज़र आ सकता है और अगर किसी देश के एक इलाक़े में चांद नज़र आ सकता हो तो बाक़ी जगह भी ईद की जा सकती है। मुस्लमान देशों में जो रोयत हिलाल कमेटियां हैं वे भी इसी तरह जायज़े लेती हैं। बहरहाल इस जायज़े के बाद, दो तीन बार दोबारा जायज़ा लेने के बाद यही फ़ैसला है कि इन्शा अल्लाह तआला ईद इतवार को चौबीस तारीख़ को होगी।

(अलफ़ज़ल इन्टरनैशनल12 जून 2020 ई सफ़ा 5 से 9)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

के लिए मुसलमान हुआ था उसे क्या पता हो सकता है कि इस्लाम की शिक्षा क्या है। जो लोग भी (RADICALISE) होते हैं , जिन मौलवियों से भी उनका सम्पर्क होता है वह असल इस्लाम पर अनुकरण नहीं करते और जो वह सिखाते हैं इस का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं होता। बहुत अफ़सोस हुआ है कि आपके पुलिस के मासूम लोग क़तल किए गए हैं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस वक़्त तो पूरी दुनिया में डस्टर बंस है सिर्फ फ्रांस में नहीं है। यू के में भी बरीगज़ट की वजह से लोग परेशान हैं। हुज़ूर अनवर ने पूछा आप अपनी इस पोस्ट के लिए नियमित चुने जाते हैं या आपको नामंकित किया जाता है?

इस पर महोदय ने निवेदन किया कि सदर और प्रधानमन्त्री ने उनका निर्धारण किया है। उन्होंने बताया कि मैं डिप्लोमेट रहा हूँ, जर्मनी , क्रोशिया और कीनिया में काम किया है। फ्रैंच एंबेसीज़ में कल्चरल कौंसिलर रहा हूँ।

फ़ैमली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सवा छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के107 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस के अतिरिक्त 25 लोगों ने व्यक्तिगत रूप से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

प्रत्येक ने बारी बारी अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फरमाएं।

मुलाक़ात कारने वालों में तयूनस से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त ख़लील इस्बाई साहिब भी थे। उन्होंने आज हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य भी पाया था।

कहने लगे कि यद्यपि मैंने कुछ साल पहले बैअत की थी लेकिन आज ज़िन्दगी में पहली बार अपने आक़ा के मुबारक हाथ पर बैअत की है। मैं पैदा तो एक मुसलमान घराने में हुआ था लेकिन आज मुझे ऐसे लग रहा है कि मैं नए सिरे से पैदा हुआ हूँ। आज मुझे एक नई ज़िन्दगी प्रदान हुई है जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा तो मुझे ऐसा लग रहा था कि एक फ़रिश्ता को देख रहा हूँ।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का आयोजन हुआ।

आमीन का आयोजन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 27 बच्चियों और बच्चों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई। आमीन के आयोजन में भाग लेने का सौभाग्य पाने वाली इन बच्चियों और बच्चों के नाम नीचे हैं।

प्रिया ईशा मन्सूर, ईमान अता, सुबीका रिज़वान , ताबीना शाद, यासमीन शीराज़, अनीला हुस्न, तबीना काहलों, कशफ़ मौकेत, सुबीका अज़हर, हानिया ज़िया, वाश्मा शाहिद, हुम्ना अहसन

प्रिय यूसुफ़ ख़ाक़ान सिकन्दर शाह, यूसुफ़ उर शमाँ ग़नी शाह,जहांज़ेब तनवीर रहमान, समीर कमाल अहमद दीन, ख़ाक़ान लबीब, फ़रीद रहमान, ताहिर अहमद, मलिक सलमान अहमद, ख़ाक़ान नसीर, नोमान अहमद, इन्तिसार अहमद, मुहम्मद कामरान,मग़फ़ूर अहमद, शाह हसीब तुय्यब, अमन मन्सूर

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

नौ मुबाईन के विचार

आज बैअत करने वाले कई नौ मुबाईन लोगों ने अपने विचारों का इज़हार किया।

जज़ाइर कमोरोज़ (Comoroseis)से सम्बन्ध रखने वाले एक नौ मुबाइअ अहमद साहिब ने वर्णन किया कि जमाअत अहमदिया दलील से बात करती है और दलील के साथ बात मनवाती है। आपको बस सिर्फ इस वजह से बात नहीं माननी पड़ती कि बस मुल्ला ने कह दिया तो इसी तरह करना है। मैंने आज ख़लीफ़तुल मसीह के हाथ पर बैअत की है अहमदी होने के बाद मुझे बहुत शान्ति प्राप्त हुई है।

फ्रांस के एक नौ मुबाइअ फ़लोरंट साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए

कहा। मुझे हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर सीधा बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह मेरी ज़िन्दगी में मेरे लिए बहुत भावनात्मक घटना है

एक नौ मुबाइअ औरत Therese Le Coq साहिबा ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मैं पहले अफ्रीक़ा में थी और धर्म से काफ़ी लगाओ था लेकिन जब से मैं यूरोप आई हूँ धीरे-धीरे धर्म से दूर हो गई। जलसा पर आने से पहले मैं बीमार थी लेकिन जलसा पर आकर मेरी जिस्मानी बीमारी दूर हो गई और इस जलसा के माहौल ने मुझे फिर से धर्म की दौलत प्रदान कर दी और यही वजह है कि मैंने अहमदी होने का फ़ैसला किया और बैअत कर ली।

इसके पति ने कहा जब से मेरी पत्नी ने जलसा में शिरकत करके बैअत की है यह बाक़ायदगी से पांचों समय नमाज़ अदा कर रही है। जबकि इस से पहले तो यह मुसलमान भी नहीं थी।

फ्रांस से बैअत करने वाले एक दोस्त लूईस साहिब ने कहा कि आज मेरी ख़ुशी की इंतिहा नहीं है। बैअत कर के बहुत अच्छा और शान्ति महसूस कर रहा हूँ और इंशा अल्लाह भविष्य में भी बहुत अच्छा रहूँगा।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :यह भी वजह है कि आपका जमाअत से अच्छा सम्बन्ध है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम जहां भी हैं बड़ी अम्न पसंद कम्यूनिटी हैं। कीनिया में भी हमारी कम्यूनिटी है। मस्जिदें हैं विभिन्न शहरों में और सैंटर्ज़ हैं अभी फ्रांस में हमने एक फ़ार्म लैंड पर जलसा किया है। बहुत अच्छा और ख़ूबसूरत स्थान है। यहां से40 किलोमीटर दूर है मुझे व्यक्तिगत रूप से शहरों की तुलना में इस तरह के खुले इलाक़े अधिक पसंद हैं

आख़िर पर खेती के हवाला से भी विभिन्न मौमलों पर गुफ़्तगु हुई। यह मुलाक़ात 6 बजकर 25 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर महोदय ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद मुबारक के हाल में तशरीफ़ आए।

वाकिफ़ात नौ बच्चियों की क्लास

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ वाकिफ़ात नौ बच्चियों की क्लास शुरू हुई। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया ईशा ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिया सालेहा यूसुफ़ और फ्रैंच अनुवाद प्रिया ईमान हदवी ने किया।

इस के बाद प्रिया सूबिया हिफ़ाज़त ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस का अरबी मतन प्रस्तुत किया और प्रिया अनीला अनस ने इस हदीस का निम्नलिखित अनुवाद प्रस्तुत किया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि वर्णन करते कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिंबर पर ख़ुत्बा देते हुए यह आयत पढ़ी। आसमान लिपटे हुए हैं उस के दाहने हाथ में। वह पाक है और बहुत ऊंचा, इन शरीकों से जो लोग इसके मुक़ाबला में ठहराते हैं हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं बड़ी ताक़तों वाला और नुक़्सान को दूर करने वाला हूँ। मेरे लिए ही बड़ाई है। मैं बादशाह हूँ,मैं ऊंची शान वाला हूँ। अल्लाह तआला इस तरह अपनी ज़ात का सम्मान और बुज़ुर्गी वर्णन करता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन वाक्य को बार-बार बड़े जोश से दोहरा रहे थे यहां तक कि मिंबर लरज़ने लगा और हमें ख्याल हुआ कि कहीं आप मिंबर से गिर ही ना जाऐं।

इस के बाद प्रिया आतफ़ा रशीद ने इस हदीस का फ्रैंच भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिया सलमा मुहम्मद हुसैन ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मंजूम कलाम

किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दउल अनवार का
बन रहा है सारा आलम आइना अबसार का

मैं से कुछ चुने हुए अशआर ख़ुश-अल्हानी से प्रस्तुत किए। इस के बाद प्रिया आसमा काहलों ने इन शेअरों का फ्रैंच भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिया रमेज़ा नसीर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद का निम्नलिखित उद्धरण प्रस्तुत किया।

इरशाद हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

" यह बात बिना किसी बेहस के स्वीकार करने के योग्य है कि वह सच्चा और सम्पूर्ण ख़ुदा जिस पर ईमान लाना प्रत्येक बंदा का फ़र्ज़ है वह रब्बुल आलमीन है और इस की रबूबियत किसी विशेष क़ौम तक सीमित नहीं। और न किसी विशेष ज़माना तक और न किसी विशेष देश तक बल्कि वह सब क़ौमों का रब है और समस्त ज़मानों का रब है। और समस्त मकानों का रब है। और समस्त देशों का वही रब है और समस्त फ़ैज़ों का वही स्रोत है। और प्रत्येक जिस्मानी और रुहानी ताक़त इसी से है और इसी से समस्त मौजूदात परवरिश पाती हैं। और प्रत्येक वजूद का वही सहारा है

ख़ुदा का फ़ैज़े आम है जो समस्त क़ौमों और समस्त देशों और समस्त ज़मानों पर छाया हुआ है। यह इसलिए हुआ कि ताकि किसी क़ौम को शिकायत करने का अवसर न मिले। और यह न कहें कि ख़ुदा ने अमुक अमुक क़ौम पर उपकार किया मगर हम पर न किया। या अमुक क़ौम को इस की तरफ़ से किताब मिली ताकि वह इस से हिदायत पावें मगर हम को न मिली। या अमुक ज़माना में वह अपनी वह्य और इलहाम और चमत्कारों के साथ प्रकट हो औमर हमारे ज़माना में छुपा रहा। अत: उसने आम फ़ैज़ दिखला कर कुरआन समस्त आरोपों को दूर कर दिया। और अपने ऐसे व्यापक अख़लाक़ दिखलाए कि किसी क़ौम को अपने जिस्मानी और रुहानी फ़ैज़ों से वंचित नहीं रखा। और न किसी ज़माना को बेनसीब ठहराया।'

इस के बाद प्रिया रग़ीबा ज़हूर, प्रिया अदीबा अलीम और प्रिया नाइला अकरम ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो के 1924 ई के दौरा फ्रांस के बारे में एक परीज़नटीशन दी।हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी एक किताब में नुज़ूल मसीह की बेहस करते हुए तहरीर फ़रमाया है कि यह जो कई हदीसों में ज़िक्र आता है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दमिशक़ के पूर्वी तरफ एक सफ़ैद मीनार पर नाज़िल होगा इस से असल मुराद तो यही है कि वह दमिशक़ के पूर्वी देशों में मज़बूत और बेऐब तर्कों के साथ प्रकट होगा मगर संभव है कि इस के एक ज़ाहिरी अर्थ इस रंग में भी पूरे हो जाएं कि कभी हमें जाने का इत्तिफ़ाक़ हो जाए या हमारे खलिफ़ा में से कोई ख़लीफ़ा दमिशक़ का सफ़र इख़तियार करे। अत: अल्लाह तआला ने आपकी इस ज़िमनी व्याख्या को भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि के द्वारा पूरा फ़र्मा दिया। आप रज़ी अल्लाह अन्हो सीरिया देश और अन्य देशों से होते हुए फ्रांस भी गए।

जमाअत अहमदिया की तरफ़ से फ्रांस में तब्लीग़ इस्लाम की सरगर्मीयों का सीधा 1924 ई में हुआ जबकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो अपने ख़ुद्दाम के साथ Wembley कान्फ्रैंस में शिरकत और मस्जिद फ़ज़ल लंडन की बुनियाद रखने के बाद 26 अक्तूबर से 31 अक्तूबर 1924 ई तक फ्रांस के राजधानी पैरिस में पधारे रहे। हुज़ूर रज़ी अल्लाह अन्हो के साथ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत चौधरी सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो, हज़रत मौलवी अब्दुर्रहीम दर्द साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो और 18 ख़ुद्दाम भी आए थे। अपने दौरे के उद्देश्य का वर्णन करते हुए आप रज़ी अल्लाह अन्हो ने एक ख़बर देने वाली एजैंसी के नुमाइंदे से फ़रमाया:"मैं इस उद्देश्य से यूरोप में सफ़र कर रहा हूँ कि यूरोप की धार्मिक हालत को अपनी आँख से देखकर सही अंदाज़ा करूँ जिससे मुझको इन देशों में इस्लाम के प्राकशन के लिए एक स्थायी स्कीम तैय्यार करने में मदद मिले। और मेरा यह उद्देश्य है कि चूँकि मैं दुनिया में सुलह का झंडा ऊंचा करना चाहता हूँ मैं देखूं कि पूर्व और पश्चिम को कौन से मामले मिला सकते हैं। '

(अलफ़ज़ल 29 नवम्बर 1924 ई)

तब्लीग़ी सरगर्मीयों के अतिरिक्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने पैरिस में एक बनने वाली मस्जिद का दौरा भी किया जिस में आप रज़ी अल्लाह अन्हो ने नमाज़ पढ़ाई और मस्जिद के महिराब में खड़े हो कर अपनी जमाअत के साथ एक लम्बी दुआ की। बल्कि आप रज़ी अल्लाह अन्हो सबसे पहले शख़्स थे जिन्होंने यहां दुआ की फ़रमाया:

"मैंने तो यही दुआ की है कि हे अल्लाह यह मस्जिद हमको मिले और हम इस को तेरे धर्म की प्रचार का माध्यम बनाने की तौफ़ीक़ पाएं।"

(अलफ़ज़ल18 दिसम्बर1924 ई पृष्ठ 6)

उम्मीद का जो बीज हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने पैरिस में बोया था अब वह केवल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फ्रांस में फैल रहा है। अलहम्दो लिल्लाह अला ज़ालिक

इसके बाद प्रिया खोला अहद और प्रिया बुशरा लतीफ़ ने पैरिस के कैटा कोम्बस The Catacombs of Paris)अर्थात पैरिस में ढाँचों के के बारे में परीज़-नटीशन दी

"कैटा कोम्ब"यूनानी शाब्द"काता"से आया है जिसका अर्थ है"नीचे' और लातीनी "को मुबाए"से है जिसका मतलब है"खोखला स्थान' कैटा कोम्बज़र ज़मीन

ऐसी खोखले स्थान को कहते हैं जो हड्डियों के ढाँचों को रखने के तौर पर प्रयोग की जाती थी

कैटा कोम्ब का आरम्भ दूसरी सदी में हुआ जो कि रुम में स्थित है, जिसमें पहुंचाए दिए गए ईसाई छुप के इबादत करते थे और अपने मरने वालों को यहां ही दफ़नाया करते थे। इन ईसाईयों का ज़िक्र सूर अलकहफ़ की नम्बर 10 मैं "ग़ारों वाले" के नाम से हुआ है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है: اَمۡ حَسِبۡتَ اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡکَہۡفِ وَ الرَّقِیۡمِ کَانُوۡا مِنۡ اٰیٰتِنَا عَجَبًا न किया तो गुमान करता है कि ग़ारों वाले और तहरीरों वाले हमारे निशानों में से एक अजीब निशान थे

अलबत्ता पैरिस के इस तहखाने का धर्मों की तारीख़ से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह नाम रुम के केटाकोमब के हवाले से 1786 ई में मन्सूब किया गया था। वास्तव में 45 मिलियन साल पहले पैरिस और इस के इर्दगिर्द पानी ही पानी था जिसकी वजह से लाइम स्टोन (limestone) के ज़ख़ीरे बन गए। और जब समुंद्र का पानी हट गया तो अंगारों में लोगों ने रहना शुरू कर दिया। इन्सान फिर अंगारों से निकला और उसने यहां शहर आबाद करना शुरू किया।

इमारत बनाने के दौर में पैरिस के लोगों ने अंगारों से लाइम स्टोन निकाला और यह पत्थर इमारत साज़ी और क़िला बनाने में काम आने लगा, पैरिस का गिरजाघर और मशहूर म्यूज़ीयम लोअर (Louvre)इस के उदाहरण हैं। धीरे-धीरे पैरिस एक शहर बन गया और लोगों ने इस में रहना शुरू कर दिया। समय के साथ साथ मरने वालों की संख्या बढ़ती गई और क़ब्रिस्तानों में स्थान कम पड़ने लगी।18 वीं सदी के आख़िर में फ्रांस में लंबी बारिशों का सिलसिला शुरू हुआ जिससे पैरिस में मौजूद यह क़ब्रिस्तान पानी से भरने लगे। और मर्दों की हड्डियां शहर में तैरने लगीं जो महामारी के फूटने का कारण हुईं। अत: समय की हुकूमत ने विशेष इख़्तयारात प्रयोग करते हुए यह समस्त हड्डियां जमा कर के अनिता ख़ानों में दफ़न करने का हुक्म दे दिया इस तरह 1786 ई में क़ब्रों का तह ख़ाना बनाने का सिलसिला शुरू हो एवनी पैरिस के हर क़ब्रिस्तान से ढाँचे निकाल कर इस तहखाने में मुंतक़िल कर दिए गए।

बीसवीं सदी के शुरू में इस तहखाने को पर्यटकों के लिए खोल दिया गया स्थानीय गाईड लोगों को इस तहखाने में लेकर जाते हैं और उन्हें हड्डीयों का ढेर दिखाते हैं। यह तह ख़ाना 200 किलोमीटर लम्बा है और उस का सिर्फ 2 किलो मीटर लंबा हिस्सा पर्यटकों के लिए खोला गया है। आप 131 सीढ़ीयां उतर कर तह ख़ाने में दाख़िल होते हैं। और फिर उस स्थान पहुंचते हैं जहां हर तरफ़ हड्डियों और खोपड़ियों के ढेर क्रम से पड़े हुए होते हैं। उसकी दीवारें हड्डियों से बनी हुई हैं। और उसका तापमान 14 डिग्री रहता है। लगभग 6 मिलियन पैरिस के शहरियों के ढाँचे इस में मौजूद हैं। इस से बाहर निकलने के लिए112 सीढ़ीयां चढ़ी जाती हैं। इस तहखाने के अंदर ज़िन्दगी की सबसे बड़ी हक़ीक़त पर फ्रैंच में एक शेअर लिखा हुआ है, जिस का अनुवाद कुछ यूं है कि

सब पैदा होते हैं , रहते हैं और गुज़र जाते हैं ,अपनी क़िस्मत जाने बिना,जैसे समुंद्र की लहरों को पानी बहा ले जाता है,पत्तों को हवाएं उड़ा ले जाती हैं, फिर एक रात इन्सान की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है

इस के बाद "यह वक़्फ़ नौ का क़ाफ़िला" के विषय पर उर्दू भाषा में एक तराना प्रस्तुत किया गया। इस तराना के बाद फ्रैंच भाषा में बच्चियों ने "ख़िलाफ़त' के विषय पर एक तराना प्रस्तुत किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाकिफ़ात नौ को सवालात करने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई।

एक वाकिफ़ा नौ ने सवाल किया कि mix culture मैं शादी करने के हवाला से हुज़ूर अनवर की क्या राय है?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अहमदियों की शादियां तो अहमदियों में होनी चाहिऐं , बाक़ी रह गया यह सवाल कि दूसरी कौमें हैं , यूरोपीयन हैं, अफ्रीकन हैं, अमरीकन हैं, एशीयन हैं, फ़ार इस्टर्न हैं, पाकिस्तानी हैं , यह आपस में कर सकते हैं या नहीं? अगर अच्छा रिश्ता मिलता है, अहमदी हो और अच्छा रिश्ता हो तो करनी चाहिए, बड़ी अच्छी बात है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने एक स्थान लिखा है कि जब अरब मुसलमान हिन्दुस्तान आए थे अगर वह इस ज़माना के स्थानीय लोगों के वहां mix हो कर शादियां करते , तो इस वक़्त जितने मुसलमान हैं वे अब अधिक होते बल्कि बहुत बड़ा क्षेत्र जो हिन्दुओं का है मुसलमानों का होता। लेकिन अब चूँकि लोग दुनिया-दारी में पड़े हुए हैं धर्म का पता ही नहीं होता। इसलिए culture बेशक विभिन्न हों, अगर धर्म एक है, मुसलमान अहमदी हैं तो अच्छा रिश्ता मिलता है तो दुआ करके करना चाहिए। कोई आपत्ति नहीं है। बस अच्छा रिश्ता होना चाहिए , अहमदी मुसलमान हो तो ठीक है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर इस वाकिफ़ा नौ ने निवेदन किया कि वह Mathematics मैं मास्टर्ज़ कर रही है।

एक बच्ची ने सवाल किया कि क्या हुज़ूर किचन में आपा जान की मदद करते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर उनको मदद की ज़रूरत पड़ जाए तो कर देता हूँ। मेरे विचार में उनको कभी ज़रूरत पड़ती ही नहीं सिवाए उस के कि बीमार हों। यही है कि प्लेट उठा दी, चमचा उठा दिया। और क्या काम होता है। हाँ जब हम बाहर घाना में रहते थे तो एक दूसरे की मदद किया करते थे। इस वक़्त तो न गैस होती थी न पानी होता था। पानी भी ला कर देता था, चूल्हों में kerosene भी मैं भरता था, लैम्प भी जिलाता था। सारा कुछ करता था।

एक वाकिफ़ा नौ बच्ची ने फ्रैंच भाषा में सवाल किया कि हुज़ूर कोई ऐसा ख़्वाब जो बहुत दिलचस्प हो और हुज़ूर को याद रहा हो हमें बता सकते हैं?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बहुत पुराना ख़वाब है। एक बार जब मैं इम्तिहान दे रहा था तो मैंने देखा था। इस वक़्त अल्लाह तआला ने मुझे ख़्वाब में दिखाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इलहाम يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَآءِ۔ है। वह मुझे भी अल्लाह तआला ने बताया और इस हिसाब से इसके बाद सालों से लेकर अब तक अल्लाह तआला मदद करता रहता है।

एक वाकिफ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ स्कूल में पढ़ते थे तो कोई ऐसा विषय था जो आपको मुश्किल लगता था?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे तो सारी पढ़ाई मुश्किल लगती थी, इसलिए मैं कोई ऐसा अच्छा स्टूडैंट नहीं था। लेकिन आख़िर में अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से कुछ अच्छा कर दिया। मुझे नहीं पिता कि किस तरह MSc हो गई। आजकल तुम लोगों को बहरहाल पढ़ना चाहिए

एक वाकिफ़ा नौ ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर बचपन में अधिक अपनी अम्मी के क़रीब थे या अपने अब्बा के अधिक क़रीब थे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दोनों के ही क़रीब था। हमारे ज़माना में जो पुराने बुज़ुर्ग थे वह एक barrier रखा करते थे लेकिन खाने इत्यादि का ध्यान दोनों ही किया करते थे। जब बीमार होता था तू अब्बा कहते थे छुट्टी कर लो,स्कूल नहीं जाना। इस वक़्त हमें अब्बा अच्छे लगा करते थे। खाने का ध्यान रखना और दूसरी चीज़ों में दोनों का ही मुझसे अच्छा सुलूक था

इस पर इस बच्ची ने निवेदन किया कि आपको अधिक डर किस से लगता था?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि डर तो किसी से भी नहीं लगता था। हाँ यह ज़रूर होता था कि कोई ग़लत बात कर देंगे तो डाँट पड़ेगी जो दोनों से पड़ सकती थी।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

वाकफ़ीन नौ की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

6 बजकर 20 मिनट पर वाकफ़ीन नौ की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ क्लास शुरू हुई। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय शायान अकरम ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिय फ़रीद अहमद और फ्रैंच अनुवाद प्रिय हसनैन अहमद ने प्रस्तुत किया उस के बाद प्रिय शरजील अहमद दानिश ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सालम के कलाम!

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हम ने

से कुछ चुने हुए अशआर ख़ुश-अल्हानी से पढ़ कर सुनाए। इस के बाद प्रिय समीर ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक मुबारक हदीस का उर्दू और फ्रैंच भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने पूछा कि कौन सा कर्म अल्लाह के निकट सबसे उत्तम है? फ़रमाया निर्धारित समय पर नमाज़ की अदायगी। फिर पूछने पर फ़रमाया उस के बाद माता पिता से उत्तम व्यवहार और फिर अल्लाह की राह में जिहाद ।

इसके बाद प्रिय तौसीफ़ अहमद ने रिसाला अलवसीयत से हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत किया और प्रिय इदरीस हदवी ने इसका फ्रैंच अनुवाद प्रस्तुत किया।

रिसाला अलवसीयत से उद्धरण

यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से कि इस ने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया। हमेशा इस सुन्नत को वह प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उन को ग़लबा देता है जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ (अल-मुजादला 22)और ग़लबा से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा की हुज्जत ज़मीन पर पूरी हो जाए और इस का मुक़ाबला कोई न कर सके इसी तरह ख़ुदा तआला मज़बूत निशानों के साथ उन की सच्चाई प्रकट कर देता है और जिस सच्चाई को वह दुनिया में फैलाना चाहते हैं इस का बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है लेकिन उसकी पूरी पूर्णता उन के हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे वक़्त में इन को वफ़ात देकर जो ज़ाहिर में एक नाकामी का भय अपने साथ रखता है मुख़ालिफ़ों को हंसी और ठट्ठे और लंछन और आरोपों का अवसर दे देता है और जब वे हंसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे माध्यम पैदा कर देता है जिनके द्वारा से वे उद्देश्य जो किसी क़दर असम्पूर्ण रह गए थे अपने कमाल को पहुंचते हैं अत: दो किस्म की क़ुदरत प्रकट करता है (1) अव्वल ख़ुद नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है (2) दूसरे ठीक वक़्त में जब नबी की वफ़ात के बाद मुश्किलों का सामना पैदा हो जाता है और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और विचार करते हैं कि अब काम बिगड़ गया और यक़ीन कर लेते हैं कि अब यह जमाअत समाप्त हो जाएगी और ख़ुद जमाअत के लोग भी शंका में पड़ जाते हैं और उन की कमरें टूट जाती हैं और कई बदक़िस्मत मुर्तद होने के मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को सँभाल लेता है अत: वह जो अन्त तक सब्र करता है ख़ुदा तआला के इस मोजिज़ा को देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि के समय में हुआ जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक असमय की मौत समझी गई और बहुत से बादिया नशीन अज्ञान मुर्तद हो गए और सहाब रज़ि भी ग़म के मारे दीवाना की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को खड़ा कर के दुबारा अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया और इस्लाम को नाबूद होते होते थाम लिया और इस वादा को पूरा किया जो दी وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا भय के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे।

(रिसाला अलवसीयत, ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 304-305)

इस के बाद प्रिय फ़ारस अहमद ,तलाल अहमद , हाशिम इश्तियाक़ और मग़फ़ूर अहमद ने हज़रत मसीह मौऊद के क़सीदा से पाँच अशआर प्रस्तुत किए

परीज़नटीशन

इस के बाद डाक्टर तलहा रशीद साहिब ने निम्नलिखित परीज़नटीशन दी: डी एन ए में मामूली तबदीली एक ग़ैर फ़आल प्रोटीन की पैदावार का कारण बन सकती है। इसके कुछ संगीन परिणाम हो सकते हैं, क्योंकि यह प्रोटीन सेल के अंदर अपना भूमिका अदा नहीं करेगा। 2008 ई में बच्चों के डी एन ए में एक ऐसा परिवर्तन देखा गया जो पट्ठों की बीमारी जिसे रअबड विमाईओ मिसी (Rhabdo-myomysis) कहा जाता है का कारण बन रहा था। यह बीमारी पट्ठों में नुक़्स का कारण बनती है। यह एक नुक़्सान देने वाली अवस्था है क्यों कि पट्ठों की वर्णन की गई ख़राबी ग़ैर फ़आल प्रोटीन के ख़ून में शामिल होने का कारण बनती है। ख़ून में ऐसे तत्वों की मौजूदगी दिल और गुर्दे को प्रभावित कर सकती है। हार्ट-अटैक या गुर्दों की नाकामी का कारण भी बन सकती है। और जब पट्ठों को पहुंचने वाला यह नुक़्सान अधिक हो तो मरीज़ की मौत का कारण भी बन सकता है। मर्ज़र अबड विमाईओ मिसी (Rhabdomyomysis) विभिन्न कारणों जैसे इन्फ़ैक्शन, नशा का प्रयोग, बुख़ार, तवील रोज़े या डी एन ए की परिवर्तनों के कारण से पैदा हो सकता है। बुनियादी तौर पर यह समस्त चीज़ें इन्सानी शरीर में मौजूद जैन LPIN1 को प्रभावित करती हैं जिससे यह बीमारी पैदा होती है। पैरिस के हस्पतालों में कुछ ऐसे बच्चे लाए गए कि उनके जैन LPIN1पर इस बीमारी का हमला बहुत अधिक था। यह 6 साल से कमउमर बच्चों पर असर कर रहा था, और एक अहम मसल की ख़राबी का कारण बन रहा था जिसके नतीजे में 30 फ़ीसद केसिज़ में बच्चों की मौत हुई।

मैडीकल टीम यह समझने में असमर्थ थी कि यह बीमारी किस तरह से जैन LPIN1 को प्रभावित कर रही है। यहीं पर एक विशेष किस्म की चर्बी पैदा हो कर ख़ून के तत्वों में दाख़िल हो रही थी जो मसल को प्रभावित करती थी। लीपीन1 तत्वों में चर्बी की पैदावार में शामिल है जो तत्व के द्वारा ताकत में तबदील होता है। इस तरह लीपीन वन की ग़ैरमौजूदगी में हम में चर्बी जमा नहीं होनी चाहिए लेकिन जब हम इन्सानी अंगों के नमूनों का परीक्षण करते हैं तो हमने देखा कि ग़ैर फ़आल लीपीन1 प्रोटीन रखने वाले बच्चों के पट्ठों में बहुत सारी चर्बी मौजूद है। यहां एक स्पष्ट अन्तर था। इस की खोज के लिए हम ने एक चूहे पर अनुभवों किए। माऊस मॉडल में मिलते-जुलते परिवर्तन और बीमारी पैदा की। हम एक ऐसा माऊस मॉडल बनाने में कामयाब हो गए जिसमें पट्ठों के बीमारी की वैसी ही विशेषताएं मौजूद थीं , अनुभवों के दौरान हमने चूहों के पट्ठों में हैरान करने वाले तौर पर अधिक चर्बी जमा होते देखा। इस मॉडल ने अनुसन्धान को आगे बढ़ाने में हमारी बहुत सहायता की।

हमने 3 सालों के दौरान बहुत सारे परीक्षण किए और पता चला कि लीपीन वन प्रोटीन के न होने पर से तत्व का एक अंश प्रभावित हुआ था, सेल के इस अंश को ऐंड-ओ-पिलासमक रेटीकोलम कहा जाता है, और यह केलशेयम बैलंस, प्रोटीन फोल्डिंग जैसे बड़े हयातयाती काम के लिए बहुत अहम है हमने बताया किया कि लीपीन वन प्रोटीन के न होने पर यह ऐंड-ओ-पिला समक रेटीकोलम ER)प्रभावित होता है जो कि ER में एक प्रमुख तनाव का कारण बनता है जिसे ER-Stress कहते हैं। ER मैं कुछ प्रोटीन होते हैं जिनको SREBP2 और SREBP1-c कहा जाता है। जब ER तनाव होता है तो यह तत्व के न्यूकलस को प्रभावित करता है। न्यू कलस के अन्दर प्रोटीन डी एन ए से सम्बन्धित हो जाते हैं जिससे चर्बी की पैदावार में शामिल जीन्ज़ की संख्या में वृद्धि हो जाती है।

हमारा विचार यह था कि फ़आल लीपीन1प्रोटीन के न होने पर एक अहम चीज़ ER तनाव होता है जो SEREBP1-c/SREBP2 प्रोटीनज़ को न्यू कलस में छोड़ देता है जो चर्बी की पैदावार में शामिल जीन्ज़ की सरगर्मी को बढ़ाने के लिए डी एन ए को प्रभावित करते हैं। इसी वजह से बीमार पट्ठों में क्रम से अधिक चर्बी जमा होती है। हमने बहुत सारे परीक्षण कर के इस नज़रिया का प्रमाण उपलब्ध किया और सत्यापन किया।

आख़िर में हमने चूहों का TUDCA नामी दवाई से ईलाज किया जो ER तनाव को दूर करने के लिए जानी जाती है , और मरीज़ों को जिगर की बीमारी जैसे अन्य बीमारियों का सामना करने की सलाहीयत उपलब्ध करती है, अनुभवों से प्रकट हुआ कि यह चूहों में बीमारी की बहुत सी विशेषताओं को ठीक कर रही है, और इस में बेहतरी लाने में मदद उपलब्ध कर रही है। अगला पड़ाव क्लीनीकल डाक्टरों के साथ मिलकर काम करना है ताकि इस बात की तसदीक़ की जा सके कि वास्तव में यह दवा एलपी इन वन जैन में परिवर्तन की वजह से पैदा होने वाली बीमारी राबडो माईओमसी (Rhabdomyomysis) के मरीज़ को दी जा सकती है

एक और परीज़नटीशन

इसके बाद प्रिय उसामा अब्दाल रब्बानी ने फ्रांस के मशहूर पहाड़ी सिलसिलों के

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 25 June 2020 Issue No.26

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

परिचय पर आधारित एक परीज़नटीशन दी।

ख़ुदा तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है "और ज़मीन को हमने बिछा दिया और इस में हमने मज़बूती से गड़े हुए (पहाड़ डाल दिए और इस में हर किस्म की मुतनासिब चीज़ उगाई।" (उल-हिजर20)

इस सिलसिला में ख़ाकसार ने फ्रांस के मशहूर पहाड़ी सिलसिलों के बारे में कुछ मालूमात इकट्ठी की हैं जो प्यारे आक़ा की सेवा में प्रस्तुत हैं: सबसे पहले मैं एल्पस (Alps) के पहाड़ी सिलसिला के बारे में कुछ मालूमात आपके सामने रखता हूँ। एल्पस सबसे ऊंचे और व्यापक पैमाने पर पहाड़ी सिलसिले का निज़ाम है जो यूरोप में स्थित है और यूरोप के 8 देशों (पश्चिम से पूर्व के पार लगभग 1200 किलो मीटर तक फैला हुआ है। इन देशों में स्विटज़रलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, लेचिसटेन, जर्मनी, फ्रांस, मोनाको, स्लोवेनिया, शामिल हैं

माऊंट बलेन्स (Mont Blanc) इस पहाड़ी सिलसिला में स्थित दक्षिण यूरोप का सबसे ऊंचा पहाड़ है जिसकी ऊंचाई 4808 मीटर है। माऊंट बलेन्स फ्रांस के शहर शामोनी में स्थित है। माऊंट बलेन्स के शाब्दिक अर्थ सफ़ैद पहाड़ के हैं क्योंकि यह सारा साल बर्फ़ में ढका रहता है इस पहाड़ को हर साल लगभग 50 लाख लोग देखने के लिए आते हैं। माऊंट बलेन्स के आसपास में सकी (ski) के रास्ते भी हैं जहां लोग खासतौर पर गर्मी के मौसम में सकी करने के लिए आते हैं। माऊंट बलेन्स के बीच में एक गुफा भी है आरम्भ 19 जुलाई 1965 ई में हुआ था

यह टनल फ्रांस के शहर शामोनी (Chamonix) और इटली के शहर को रमाईवर (Courmayeur) को आपस में मिलाता है। इस टनल को टनल दे माऊंट बलेन्स (Tunnel de Mont Blanc)कहा जाता है

आल्प्स में स्थित एक और मशहूर पहाड़ है जिसका नाम बार दे अकरेन्स (Barres des Ecrins) है। इस पहाड़ की ऊंचाई लगभग 4100 मीटर है और यह पहाड़ पलोव (Pelvoux) के शहर में स्थित है। इन पहाड़ों में कुछ मशहूर दरियाओं के नाम पौ (Pau) और रोने (Rhone)हैं

इस के बाद पीरे ने (Pyrnes) दक्षिण पश्चिम यूरोप का एक पहाड़ी सिलसिला है जो फ्रांस और स्पेन के मध्य क़ुदरती सरहद है। इस पहाड़ी सिलसिले की बुलंद तरीन चोटी ईंटों की है जिसकी ऊंची3404 मीटर है। यहां एक देखने योग्य झील भी पाई जाती है जिसका नाम लकदार तवस्सुत (lac d'Artouste) है। यह झील काफ़ी मशहूर है।

आख़िर में मासीफ़ सेंट्रल के पहाड़ी सिलसिला के बारे में कुछ मालूमात प्रस्तुत हैं। मासीफ़ दक्षिण फ्रांस के मध्य में एक पहाड़ी क्षेत्र है जो नोकदार और चोटियों और बराबर ऊँचाइयों पर आधारित है। यह इतना बड़ा है कि फ्रांस के कुल क्षेत्रफल का 15 प्रतिशत बनता है। इस में सबसे ऊंचा पहाड़ पोई दे साँसी है। यह एक पुराने एस्ट्रो-ओ-लुका नो (astro volcano) का हिस्सा है जो लगभग 220000 साल से असक्रिय है। इस पहाड़ की ऊंचाई 1886 मीटर है।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

कुर्आन मजीद की तिलावत का महत्व

हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ि विर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

مَنْ قَرَأَ أَلْفَ آيَةٍ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى كُتِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيْقًا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى۔ (مسند احمد)

अनुवाद: जिसने विशेष रूप से अल्लाह की प्रसन्नता के लिए एक हज़ार आयात तिलावत कीं वह क़यामत के दिन अंबिया, सिद्दीक़ीन, शहीदों और सालेहीन में लिखा जाएगा और यह क्या ही अच्छी रफाक़त होगी।

कुरआन करीम की शिक्षाओं के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम को ध्यान से क़ुरआन करीम की तिलावत सुनने की भी बहुत नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं। إِنَّ الَّذِيْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ لَهٗ أَجْرٌ وَإِنَّ الَّذِيْ يَسْتَمِعُ لَهٗ أَجْرَانِ (अद्दारमी फ़ज़ाइलुल क़ुरआन) अर्थात जो क़ुरआन की तिलावत करता है इस के लिए एक बदला है और जो ध्यान से सुनता है इस के लिए दुगना बदला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"कुरआन शरीफ़ को भी अच्छी आवाज़ से पढ़ना चाहिए। हदीस शरीफ़ में आया है رُبَّ قَارٍ يَّلْعَنُهُ الْقُرْآنُ अर्थात बहुत ऐसे कुरआन करीम के क़ारी होते हैं जिन पर कुरआन करीम लानत भेजता है। जो शख़्स क़ुरआन पढ़ता और उस पर अनुककरण नहीं करता इस पर कुरआन मजीद लानत भेजता है। तिलावत करते समय जब कुरआन करीम की आयत रहमत पर गुज़र हो तो वहां ख़ुदा तआला से रहमत मांगी जाए और जहां किसी क़ौम के अज़ाब का ज़िक्र हो तो वहां ख़ुदा तआला के अज़ाब से ख़ुदा तआला के आगे पनाह का निवेदन किया जाए और ध्यान और ग़ौर से पढ़ना चाहिए और इस पर अनुकरण किया जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 157)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" असल चीज़ यही है कि कुरआन करीम से ऐसी मुहब्बत हो कि इस में डूब कर उसे पढ़ा जाए...अल्लाह तआला ने अच्छी तरह से पढ़ने का हुक्म दिया है। ठहर-ठहर कर और जिस सीमा तक बेहतरीन उच्चारण से अदा हो सकता है अदा कर के पढ़ा जाए...कुरआन करीम पढ़ना ज़रूरी है। इस में बेहतरी लाने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन सिर्फ इस बात पर कि कुछ शब्द हम अदा नहीं कर सकते या मुश्किल हैं ,कुरआन करीम पढ़ना ही नहीं छोड़ देना चाहिए बल्कि तिलावत की तरफ़ रोज़ाना हर अहमदी का ध्यान होना चाहिए। हाँ यह कोशिश ज़रूर होनी चाहिए ...कि असल के जितना क़रीब तरीन हो कर आसानी से शब्दों की अदायगी हो सके,की जाए और फिर इस में बेहतरी पैदा करने की कोशिश जाए।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 31 जुलाई 2015 ई ख़ुत्बात मसरूर भाग 13 पृष्ठ 447 से 448)

अल्लाह तआला हमें बहुत अधिक कुरआन की तिलावत करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad